।। श्रीसीतारामाभ्यां नमः ।।
।। श्रीमते भगवते रामानन्दाचार्याय नमः ।।
।। श्रीमते सद्गुरवे नमः ।।
।। श्रीमते हनुमते नमः ।।
।। श्रीमती चन्द्रकलायै नमः ।।
।। श्रीमती चारुशीलायै नमः ।।

श्रीसीतारामसुषमा विलास

श्रीयुगल सहस्र नाम, नखसिख वर्णन, सुषमा विलास, श्रीजानकी अष्टक, श्रीजानकी सतक, श्रीयुगल प्रेम विलास, प्रेमाष्टक, श्री युगल सनेह पंचक ।

प्रकाशकः—

श्री वैदेहीवल्लभ शरण जी महाराज
श्री हनुमानबाग वासुदेवघाट श्रीअयोध्याजी

पुस्तक मिलने का पता—
श्री हनुमान बाग, वासुदेव घाट, अयोध्या ।

प्रथमबार—१०००] सन् २००२ न्योछावर १२) रु०

मुद्रक :- मनीराम प्रिंटिंग प्रेस, शास्त्रीनगर, अयोध्या ।

दो शब्द

श्रीयुगल सरकार की असीम अनुकम्पा से यह ग्रन्थ आपके सामने प्रस्तुत है ।

सन्त विटप सरिता गिरि धरनी ।
परहित हेतु सबन्हि कै करनी ।।

सन्तों का जीवन पराये हित के लिये ही होता है । श्री नाम, रूप, लीला धाम में तल्लीन रहने वाले श्री वैदेही-वल्लभ शरण जी महाराज की बहुत दिनों से इच्छा थी कि श्री युगल सरकार के रसमय सहस्रनाम, नखसिख शोभा विलास आदि प्रकाशित होकर रसिक सन्तों की सेवा में प्रस्तुत हो । सो महाराजजी की भावना पूर्ण हुई । प्रस्तुत ग्रन्थ में श्रीयुगल सरकार के दिब्य नामों का रसमय वर्णन है जो रसिकाचार्य श्री कृपानिवास स्वामी जी कृत है । श्रीप्रेमसखी कृत श्रीयुगल नखसिख वर्णन है । श्री रसरङ्ग मणि कृत श्रीयुगल सुखमा विलास भावना मय वर्णन है। बड़े सरकार पूज्य श्रीयुगलानन्य शरणजी महाराज कृत श्रीजानकी अष्टक, श्रीजानकी सतक, और युगल प्रेम विलास, प्रेमाष्टक और यमल सनेह पंचक, श्री रसिक बल्लभ शरण जी महाराज कृत अति रसमय वर्णन है ।

श्री महाराज जी ने प्रूफ शोधन की सेवा मुझसे ली ग्रन्थ प्रकाशन के सहयोगी श्री सीताराम लाहोटी आसाम, एवं श्रीराम परमहंस जी महाराज मधुबनी अति धन्यवाद के पात्र हैं आशा है ग्रन्थ अवलोकन कर रसिक जन अति प्रसन्नता को प्राप्त होंगे ।

रसिक महानुभावों का लघु अनुचरः—
सियाराम शरण
श्री सीताराम कुंज झुनकीघाट श्रीअयोध्याजी

॥ श्रीजानकी वल्लभाय नमः ॥

अथ श्रीजानकी सहस्र नाम

स्वामी श्री कृपानिवास कृत

हरिपद छन्द

जय श्री जानकी जगत वंदनी पाद पद्म सिर नाऊँ ।
प्रीतम रटनि उपासिनु सर्वसु नाम सहस गुन गाऊँ ॥
मंगल मूरति मंगलप्रद सद मंगल मोद निवासा ।
अपने गुन अपने जन अंतर आपहिं करत प्रकासा ॥१॥
जनक नन्दनी जनक कुंवरि वर जनक सुता सुकुमारी ।
जनक लड़ैंती लाड़लड़ी श्रीजनक किशोरी प्यारी ॥
जयति जानकी सियजू सीता नाम मैथिलि गायो ।
राम प्रिया श्रीराम रमनि श्रीराम जीवन धन पायो ॥२॥
राम वल्लभा प्राण प्राणनी पटरानी सुखदानी ।
महल विहारनि सुरति उदारनि सुखकारनि सब मानी ॥
नवल किशोरी गोरी भोरी थोरी बय थुर बोली ।
नव योवन नव वाला तरुनी नवला पुष्पनि तोली ॥३॥
कनकतनी कमलाक्षी कामिनी कमलमुखी कमलांगा ।
कमनी कामद कोक कला विधि कामप्रिया मदभंगा ॥
मृगप कटी मृगनैनी मृदुला मृदुवैनी मृदुहासा ।
मनहरनी मतिवारी मोहनी मगना मान निवासा ॥४॥

सोहनि सुन्दरि सीला श्यामा सारदानि सुखकारी ।
सिर मोरनि सिरदार सिलौनी सांवत सुरति सुखारी ।।
बांकी वामा वक्र विलोकनि बक्र कला वर वेनी ।
खंजनि अंजन मन रंजन सा दुख गंजनि सुख सैनी ।।५।।

रसकनि रसदा राम सुकान्ता रसवेत्ता रस रासा ।
हंसनि हंस गवनि हँस वचनी हरि पत्नी हिय बासा ।।
अलकलड़ी सु अनोखी अबला अलबेली अरबीली ।
आनन्दी आनन्द सरोवर गुणवंती गरबीली ।।६।।

सुघर सुहाइ सुवलास्वामिनी सुवद सुनेहनि सुभदा ।
प्रेमाकर प्रीतिग्या पारस पिक बोलनि पिय प्रमदा ।।
नव नागरि सुखसागरि सर्वसु सर्वेश्वर ससिबदनी ।
सर्नपाल सर्बोपर सीया सज्जनता की हृदनी ।।७।।

करुणाकर सुकृतज्ञ कृपाकर गुनआकर करि गामिनि ।
चिंतामनि चातुर तर चंचल अमलांगी दुतिदामिनि ।।
भागभरि भावनी बड़भागनि भोगनिधी बर भरनि ।
अनुरागनि सु सुहागनि सगुनी सुरति विनोदनि ड़रनि ।।८।

छवनि छबीली छकनि छकीली छलवंती छल छीना ।
रूपवती रसवती बल्लभी बल्लभ नारि नवीना ।।
सुरति सवादनि आह्लादनि प्रिय प्रियवादनि पियप्यारी ।
सय्यामंडनि रहसि विचच्छनि रहसि बिलासनि भारी।।९।।

रतिदानी रतिविज्ञ रसीली रामप्रिया रामांगनि ।
पतिबरता पतिवंती प्राणा परमेश्वरि पति संगनि ।।
प्रफुल बदन प्रफुल्लांगा प्रफुला प्रकृतिपार प्रभुतासी ।
परिकर पाल प्रतापनि प्राप्ति परमारथनि परासी ।।१०।।

महादेवी महादिव्या देवी महारानी महिमापर ।
महद् जन सेव्य महा मंगल निधि महदगुनी गुनमंदर ।।
कल्यानी कल्यान निवासा कर्मा कर्म निकंदनि ।
आदिशक्तिअविनासिनि अमला शुद्ध सच्चिदानंदनि ।।११।।

सुचिदविलासनि चिदानंदनी चिन्मय चितचूड़ामनि ।
तुरीय जु ताप निकंदनि वारनितृप्ता त्रिभुवनि पावनि ।।
नित्य निरामय निसक नियंता निजाधीन नव रंगी
निर मायक नायक सुनायका नीरबाधिक नितरंगी ।।१२।।

अकल अनादनि अगम अजन्मी अदभुत अविकार नित्वं ।
अमल अनूप अवाच्य अभंगी अनुदिन नाम जपित्वं ।।
मानवती सु अमान मानप्रद सुमुखी सु दृगनि सुसीला ।
भद्रे भद्र करनि भद्रालय भूरिकला भरिलीला ।।१३।।

महा लक्ष्मि मह लक्षन प्रद बहु लक्ष्मी सेव्य सदाई ।
महमूरति परिपूरति पूरनि दुल्लभ सुल्लभ गाई ।।
रंग भरी सु रंगीली ललना लाल लाड़ली लोनी ।
राम बाम श्रीराम भामिनी राम रँगी रँगभौनी ।।१४।।

राम बिलासनि रामकामिनि राम बधू ठकुरानी।
राम बाल श्रीराम सु पतिनि राम नारि रसखानी।।
राम निवासनि राम उरालय राम रंजनी रागा।
राम रमावनि रामसुंदरी राम जपति मन लागा।१५।।
अभिरामनि सुअखंड अजोनी अहिबातनि गंभीरा।
गुनबादनि दुख दारिद दमनी सुख पारद पटधीरा।।
कंत कामप्रद काम निगारी कायर केलि अहारी।
पुष्ट नितंबनि इष्टालंबनि मुष्टि कटी रतिकारी।।१६।।
अलक निवारी प्रान अधारी रति प्यारी पर वारी।
रस रसढारी छबि उजियारी रूप सिंगारी सारी।।
कंठ कपोती मंजुल जोती सुखमाती सुख पुंजा।
सुरति केल सारंसी सीते सुख सीवा सुखभुंजा।।१७।।
सुरति अमोघनि सुरति भोगनी सुरति जोग्य रति जोग्या।
सुरति बड़ावनि सुरति प्रतिज्ञा सुरति निलज सुरतिग्या।।
सुरति लज्जनी सुरति सज्जनी सुरति समयसि प्यारी।
सुरति कठिनता कोमलता तर रति प्रगटा गुप्तारी।।१८।।
सुरति विलंबनि अविलंबनि सी सुरति अचल सचलारी।
सुरति अबोला रति बोला तू सुरति बला निबलारी।।
सुरति अभीरा रति भीरा पतिरति हीरावलि नामा।
रंग भीनी रँग रैनी रंगा रँग दानी रँग धामा।।१९।।

नव नेहा नवरसी उर्बसी नवदेहा नवनीता ।
नवरूपी नवकला प्रवीना नवकांतिनि नित जीता ।।
नवलीला नवसील उसीली नवल हठीली सुमरों ।
पीतांगी पीसंगिनि पीपर प्रीतग्या पगुपरों ।।२०।।
वर वरनी वर विलसनि विद्या वरदानी वैदेही ।
जपों जनकजा जनकात्मजा जनकलली हरिगेही ।।
जनक सुतनया जनक सुपुत्री जनक कन्यका भजिये ।
जनक सुदुहिता सुहिता सोभनि रामघरनि रस जीये ।।२१।
प्रीतकनोड़ी प्रीतप्रदा पर प्रतिज्ञा गुणग्राही ।
प्रीत प्रतिज्ञा प्रीतप्रकासनि प्रीतासन प्रियभाही ।।
प्रीतम सुख प्रिय पालक मालक भ्रम सालक श्रमघालक ।
पति भूषन निर्दूषन तनतिय पिय पोषन गुण जालक ।।२२।
सुजन उपास्य ध्येय वर ध्याता धर्माधर्म सु धर्मा ।
मर्मी मर्म तुही प्रपंच पर परमा पर सुखपर्मा ।।
तरुनी तिलक तरुन तासींवां योवन भरी सुगर्वा ।
रूपबावरी रूपसिरोमनि रूपरासि छवि सर्वा ।।२३।।
अब्जुपदी कर नलनी निर्मल रस निर्नय रसनीवा ।
वचन कटाक्षी केलि कटाक्षी कृशकटि काम कटीवा ।।
हित बादनि हितस्वादिनि हित्त सी हितग्राही हितपेरनि ।
हितकारनि हितसारिनि हितकी हितझरनी हितहेरनि।।२४

मिठबोली अटपटी अरीली अलसीली अर्झीली ।
झमकि गामिनी झरनि महारस रास द्रवनि दर्बीली ।।
रास विहारनि रास अहारनि रास भंडारनि अघटी ।
रास हुलासनि रास विलासनि रास प्रकाशनि सुघटी ।।२५
वर दुलहनि वर बनी बरांगी वर बनिता बरवारी ।
उच्च उरोजनि उलत केलनी उत्तमता उपकारी ।।
कल्पलता सुरधेनु कामतरु कुंदकली सु मुकुंदा ।
कल्पाकल्प सुपार प्रगल्भा विल्गु सुभा सु अमुंदा ।।२६।।
निमि सु वंस अवतन्स प्रसंसित महिषी हंस सुवंसे ।
रघुकुल पाल अवध नृपरानी वानी वेद प्रसंसे ।।
अवधिजोति गुन अवधि-२ छबि सील अवधि सुख अब्दा ।
कीरति विसद असब सद करनी शब्दातीत सुशब्दा ।।२७
गिराज्ञान गोतीत अकथ पद शत प्रतिज्ञ सदरूपा ।
सद संकल्पा दीन दयाकर तल्प निलय वर भूपा ।।
आरति हरनि सुजन वत्सल तुम कोमल मनी मदीसा ।
मद सेवा मद इष्ट मदालय पालय पद मदसीसा ।।२८।।
हरि सौभाग्य हरिसा हर्षी हरको दंड गहावनि ।
हेमवल्लिका बिल्व पयोधरि वय श्यंधनि सुख सावनि ।।
साधनि साध्य सुदृष्ट सुदृष्टा श्याम वसिष्टा साधा ।
परआसय परिपूज्य परापर अवतारी रति परधा ।।२९।।

आनँदकंद कला पूरन पति पत्नी कली कलगंधा ।
सुरस सुगंधा मधुकर फंदा छल छंदा बलवृन्दा ॥
पति उरवेता सरुचि सचेता उरगीता वरमीता ।
खंड अनीता जगदातीता रसपीता जयसीता ॥३०॥
बुद्धि विसारद दारिद भंजन भवबारिध वर पोतं ।
सुखसोतं श्रोतं सब विनया नया निर्मल जोतं ॥
मन वंचक गुण संचक सुमनी मननी मान बेहिरा ।
लोल विलोचनि लचकि लंकनी लगनि लालची लेहिरा॥३१
जन रक्षक पन पक्षक साक्षी भक्षक कुरुचि कुचाली ।
दक्षि सुक्षता लक्ष पालनी चक्षुवसा गुनमाली ॥
हेत अखंडित प्रणति सु मंडित पंडित पूज्य परज्ञा ।
मंजुल तनि जगमंजुलता तू मंजुल मानस्तुरज्ञा ॥३२॥
अघमोचनि चितरोच्च असोच्चनि लोचनि सुखसिरछत्रं ।
सुखमंतर पर मंत्र मंत्रनी सुखजंतर सुखपत्रं ॥
पतिसानिधा सत मार्गा सारंत ब्रह्मपरा ब्रह्मेस्वरी ।
सर्वंश्रृ याश्रये करत सर्व श्री शोभराज राजेश्वरी ॥३३॥
सर्वनुतावर मता गता पर मुक्ता कथा सु महंता ।
श्रुतिवत्ता बृति बृत्त सत्ता सुचि अवलंबनि प्रिय संता ॥
भक्ताधीन भाग्यमनि भयहर भक्तप्रदा भक्तेश्वरी ।
भक्ति सुबिज्ञा भक्तिफलीभल भक्ति भुक्ता जक्तेश्वरी ॥३४

नितजुक्ता पतिरता समीता बिसम बन मद दरनी।
बरकुसला वर कुला कपैलिनि कुलसोभा कलतरुनी ।।
आप अमोला अतुला अतिभा अपनिग्या अपनायस ।
सौम्यसज्जना नंद उदारिक सौरभ रति पति साहस ।।३५
मंगल मुखी महामंगलदत्त मंगल करनि मंगला ।
मंगल भवम् अमंगल हारी रंगसुरिली रंगला ।।
मंगलमूरि पूरि मंगल दुति मंगल रूप स्वरूपा ।
मंगल भरी प्रसाद सजीवन पूरी प्रेम अनूपा । ३६।।
मंगलसिन्धु सु श्याम संमती श्याम शरीर रसीली ।
श्याम समीपा श्रीपासखियां श्याम दर्व्य दर्बीली ।।
चित्रकूट रानी चिरजीवा चित्र विचित्र चिरानी ।
चित वेता चिदभोग्य भोगनी चित थानी चितमानी ।।३७
चित लावनि चित चोर चंपका चित चौंपनि चित चर्चनि ।
चिदलीला चिदकला चारुचित चित पर्ज्यो चित अर्चनि ।।
चितत फल चिता अपहर्नी चित्रकूट बन विलसनि ।
षोडस कला षोडस सिंगारी षोडसबन सो उपबनि।। ३८।।
वरनेष्टा वर निष्टावंती अष्ट अंसि वर अंसी ।
रूप त्रिवेनी महातीरथसी सरत सुरति सु फंसी ।।
सरयू क्रीड़नि पुलिन विहारनि नलनिगामि अलि व्यष्टा ।
मंदाकिनि पयश्वनी परसनि अरसनि सरसनि प्रष्टा ।।३९

श्रुतिकीरति उर्मिला मांडवी नामंगी श्री आंगी।
मिथिला पूज्य ध्वजाधर धौलं नौतम केलि कलांगी ।।
रसनियतात्वं रसधी दियता श्रुति बिहिता श्रुतिसारं।
दरस दरसनिय दरसदायनी दरबारनि दरबारं ।।४०।।

पती परसी रति सरसी सुपती ध्रुवती जुवती मौलनि।
सभासौम्यनी सुपति रिझावनि सभा रीझरिझ बोलनि।।
रिझवारनि रति अरनव से ता सुजन संभारनियेता।
खिलवारनि अखिला सुमिला रतिविमला विमल निकेता४१

सुवल प्रसंसनि भव्य भावना भाव सहायक दायक।
रतिविप्रीता द्रविता मयता माया मूरि अमायक ।।
रति चिन्हा सु अभिन्ना रतिलय रतिसूचय रतिसूचय।
मंगल चय सु अमंगल मूचय जस बितान कीरतिपय ।।४२

गान कलावित राग अहारी षटऋतु भोग सु भोगनि।
सती शिरोमनी सुक्रिया सुखिया कृपा प्रोक्ष अमोंघनि ।।
राघव दारा हनुसाहिबनी सीस धनी धनवानी।
काव्य कविश्वरिशिव सेवा सिध रिद्ध पदारथ मानी ।।४३

सौम्य बिलोकनि वृत सु साकं स्त्रुनषासा षसभूषनि।
गौरवताप्रद गरबी धरजा गंगगुनी तुर तूषनि ।।
सदा बसंती सोभंती तर लोभंती पति लुब्धा।
पिक शब्दा परस्वांति पपीहो मयुरनि पी घनशब्दा ।।४४

हिम प्रतिमा हिमकली अलीनिधि तुलीसु प्रेमतुलारी ।
अतुल बिनादनि विपुल बोधनी चेटक चित चपलारी ।।
विभु वैभव सो तम तम दरता करिकर तरल अतर्क ।
राम सु चन्द्र चन्द्रिका चिद्घं न चिद कीरनि रामार्क ।।४५

राम सु पादप लता लगोही रामकंज केशरसी ।
राम मलय सौरभ मनिनागं राम घ्राण बेसरसी ।।
राम सु संपुट रतनि जतनि जनु राममुकुर मूरतिसी ।
लोयन पुतरी लाल सु लालनि पूरी परिपूरतिसी ।।४६

राम नीर तिम बीची समसर राम कुमुद कौमुदनी ।
रामा रामबाटिका वरनी राजरोग ओषधनी ।।
राम कुरंग रागनी रत्ता रामरती रति पूरा ।
कुल कदली कर्पूर केवरा कस्तूरी गुनभूरा ।।४७।।

सुक्ति भाति मोतिन मखतूला मया सुमेरु मवासी ।
मयन विजय मयन्हासनि मयत्री पत्री हेतु हुलासी ।।
कुसम कौमला कुसमित सयनी परजनि कोक तमारी ।
कुंकुमांगि मंजुल लतिकंदरी कंचनसी फुलवारी ।।४८।।

अनुकंपा रतिकंपा कामिनि केवटि काम सरोवरि ।
जगन सुजोति जोतपर जोती जुवती मुखसुखधरहरि ।
अगमाचरनी वृत्युपुनीता हरमाता हरिध्याना ।
हरि मोदं हरि बोध परायन हर ईशा हरिगाना ।।४९।।

हनुसेवा हनुमान मान्यता मानंदी मायासी ।
अद्भुत अतिसय अरुज अयोनी राम सु द्रुम छायासी ॥
रामयसी रामांमीय श्रीयदा यसकोसा यस मूला ।
यसबारिध यसपाल मालयस यम अतुला यसफूला ॥५०

रामरटी पतिजटी नटी नव सुघटी सु सम सुबासनि ।
सैला सील सी रोम सीलसर सीलदत्त सीलासनि ॥
श्रीपद श्री सविता कुलसरिता श्रीसिर मुकुट सर्वश्री ।
गौपुत्री गोपूज्य गोपरा गोस्वामिनि भरताश्री ॥५१॥

आसुतोषनी आसपूरनी असनीये उरआसा ।
बंसअगर चोवा पतिसोहा अधर वाक्य अधहासा ॥
अधम उधारा धीर प्रणत जन अरुणाधर अधहेरनि ।
छित पालनि छित छबी छैलनी छीरगुनी गुनप्रेरनि ॥५२

छटी सु छंदनि केल प्रबंधनि जग अभिनंदि अनंदा ।
मिष्टसुरी मिष्ठा मारंजनि भोंह नमित रसकंदा ॥
उच्चति भाल विशाल भोगनी कृपनिपाल करुनामय ।
कारुनीक कौशलपति रानी कृपासिंधु क्रीड़ाचय ॥५३॥

सुरस कोपनी कोपगंजनी क्रियाकेलि कटिषीना ।
कनकागदी किलौल कृपाकर करछाया कर बीना ॥
रसघातनि रसबातनि थाथनि रस साधन रस साधी ।
सुषसादा कलनादा परदा उपाध्याय हनिब्याधी ॥५४

सुधा नामिनी सुधा धामिनी सुधा सिंधु सुधबोलनि ।
अमृत लीला अमृतभोगी अमृत पद अमिघोलनि ।।
अमृत कली अमीय सरसिका अमृत दत्त अमीसी ।
अमृत ओघ अमी भा तरभा अमीसु गोभ समीसी ।।५४

क्षमा मूरती क्षमा पूरती क्षमा छंद रदरक्ता ।
क्षमा सु सार क्षमा सागर श्री क्षमा क्षकी क्षमि वक्ता ।।
ततुवेत्ता पुरनत तत्वसी, तम तरनी तारायनि ।
त्रैगुनरहृति त्रिकालज्ञात्वं त्रविधि पाल पारायनि ।।५६

सितरस्मी सु पुनीतां व्रीजा मिथिलाश्री मितभाषनि ।
तल्पारूढ़ सुढ़ गूढ़ रहस्या दशधा फल रस चाषनि ।।
रूपाढ्या रूपेक्षा पक्षी रुचि क्रीड़ा रुकमांगा ।
सुता सुनैना मोदनायक रसरति संगम गंगा ।।५७।।

रामरसालय रामत्वंभज रामरसी रामायन ।
राम रसीली रामस्वरूपी रागा रामरसायान ।।
ओंकारी श्रीबीज सुक्षमा सब साक्षी सानंदी ।
सर्न सुखाकर सेवासुल्लभ संतमान मानंदी ।।५८।।

सहस्रनाम उचरे मैं निजहित जो हित चाहों समरो ।
रंगमहल रस रहसि पायबो यह साधन सिध हमरो ।।
जोग्य जज्ञ तीरथ ब्रत साधन मुक्ति गहै पद आई ।
सीतासहस्र नाम पाठ यह पढ़त सदा मन लाई ।।५९।।

अर्धनाम जग तारनि हित श्री सहस्र नाम जपु जोई ।
फलकी संख्या वरने कों सिय राम तासु बस होई ।।
विघन व्याध श्रम शूल कुपातिक रुज भय अवगुन मूला ।
अनायास जरि नाम जपति ते प्रवल अनल खलतूला ।।६०
परम उपासिक कहि सुनि फूलैं कुटिल करें कुटिलाई ।
मुक्ता भोजन रुचि हंसनि कौं बायस खल कठिनाई ।।
रहसि विलास रहसिगुन सीता रहसि नाम की आसा ।
जयति प्रशाद कृपा रसपायो गायो कृपानिवासा ।।६१।।

इति श्री जानकी सहस्रनामश्री कृपानिवास जी महाराज कृत श्री जनकनन्दिनी जू के अपर्णमस्तु ।



।। श्रीजानकी वल्लभाय नमः ।।

अथ श्रीराम सहस्र नाम

।। हरि पद छन्द ।।

जयति राम रघुवीर धीर पर राघव रघुवर प्यारे ।
रघुवंसी रघुचन्द अमंदं रामचन्द्र उजियारे ।।
रघुकुल तिलक राघवी राघव रघुकुलपाल कृपालं ।
रघुपति रघुराई रघुराजा रघुवाला रघुलालं ।।१।।
रघुनायक रघुनाथ राजश्री रघुकुल मणि रघुभूपं ।
रघुकुल मंडन भूषण रघुकुल भूपति भूप अनूपं ।।
हंस वंस अवतंस प्रसंसित हंस कुली वर हंसं ।
हंस गाम पद हंस फंस दल हंस सरोरुह वंसं ।।२।।
दशरथ नन्दन दाशरथी श्री दशरथ सुत सुकुमारं ।
दशरथ कुंवर सुवन दशरथ श्री दशरथ पुत्र उदारं ।।
दशरथ लाल सुवालक पालक दशरथ तनय सुव्रातं ।
दशरथ आत्मज राज किशोरं अवधि नाथ गुण व्रातं ।।३
अवधि पाल अवधेश अवधि पति अवधि राज अधिराजं ।
अवध भूप नृपराय अवध पति अवध चन्द सुख साजं ।।
कौशल्या सुत कौशलेश वर कौशल पाल सुकुशलं ।
कौशलपति कौशल मंडन वर कौशल नृप यश अमलं ।।४

कौशल नाथ अनाथ नाथ श्री कौशल चन्द मुकुंदं ।
सुख सागर सुख सिन्धु मंजु सुख सुख सीमा सुखकंदं ॥
सुख वारिद सुख सारद पारद सुख वारिधि सुखकारनि।
सुख पुंजं सुख भुंजं मंजुल सुख सारं सुख आरनि ॥५

सुख सर्वं गर्वं सुख द्रव्यं सुख सेवा सानन्दं ।
सेवक सुल्लभ जानकि वल्लभ जग वल्लभ मानंदं ॥
जानकि रमन जानकी जीवन जानकी पति परमेश्वर।
जानकि नायक जानकि पति प्रिय सिय स्वामी सर्वेश्वर ॥६

जानकी जान जान की पालक जानकी बल वलबंतं ।
जानकी रंग रँगीले श्री रंग जानकी वर सिय कंतं ॥
सीता प्रान महा सीतल गुन सीता संगी सज्जन ।
सीता साहस श्री सीता सुख सीता सर्वस पुज्जन ॥७॥

जानकी प्यारे जानराय पिय जानकी हित हितकारी ।
जानकी मित्र विचित्र चित्र चित जानकी चित्त विहारी।
सीता स्वाति सुचातक चातुर सुघर सिरोमनि चिरजी ।
सीता माल सिरोमनि सुन्दर सीता प्रीतम पर जी ॥८

जानकी भूषण निर्दूषण तन गुण भूषण गुण मंदिर ।
जानकी वासं जनक जामातं जानकी भोग परं पर ॥
सुखमूलं अनुकूल सुनायक सुखदायक सुख सारं ।
सिय दृग अंजन जन दुख गंजन हरि जन रंजन तारं ॥९

भुज प्रलंव शिव चाप निखंडन जग मंडन जगदीशं ।
प्रणत पाल करुणा कर कोमल कमल नैन कामीशं ।।
काम विमोहन काम कलावित काम सुदंत कृतज्ञं ।
कारुणीक कारण सब सर्वसु सर्व पूज्य सर्वज्ञं ।।१०।।

वरदानी वर दान्य मान्य वर वर धीरा वर वीरं ।
वर दूल्है वर वानक वनरा गरवीला गंभीरं ।।
नव जोवन नव नेहि नवल नव नव नायक नव नागर ।
नवलकिशोर नवल गुण नवसुख नवलपाल गुण आगर ।११

गुण ग्राही गुण पूज्य गुणज्ञं गुण गौरव गुणवंता ।
भय हरणं भव तारक भरणं भव पारं भगवंता ।।
भजन सार भजनीय भूरि गुण भूरि कला भ्रमहारी ।
भव्य भाय भगवान भीर हर भक्त हेत हितकारी ।।१२

भक्ताधीन सुभक्त भक्ति प्रद भक्त प्राप्य भक्तेशं ।
कल्पतरू महि काम धेनु कल कल्पा कल्पम शेशं ।।
कल्याणं कन्दर्प जोति तर कोक कलावित कर्त्ता ।
कंज पाद करकंज कंजमुख कंज मृदुल फल भर्त्ता ।।१३

महल विलासी सुरति उपासी सुखरासी सुख मांगं ।
महल विहारी रहस अहारी सद भोगी साराँगं ।।
सुरत सनेही वैदेही वर सुरत सवादी सगुनो ।
सुरत सौम्य सौन्दर्य सोहनो श्याम सलौनो लवनो ।।१४

सदवक्ता सदसार सूरती साँवत सुरति सुपुरुषं ।
रस अधिकारी रसकारी सर रस धारी रस वरुषं ॥
रस सागर रस नागर आगर रस मुक्ता रस युक्तं ।
रस वक्ता रस थक्ता—सक्ता रस व्यक्ता रस रक्तं ॥१५
रास विहारी रास अधारी रास कारि रासासन ।
रास रमन्ता मद मन्ता मद पूरन्ता परमातन ॥
रस पन्था रसवन्ता नन्ता दुख हन्ता सुख रन्ता ।
रति रतमं उनमन्तं सन्तं रति गुरूतम रति कन्ता ॥१६
सेज समीपी सजजापी प्रिय सेज स्वार्थी साँवल ।
गोरा लिगो प्राण प्रसङ्गों सुरति अभङ्गो दाँवल ॥
उर आयतनो नेह नवल प्रिय नव मूरति मृदु अङ्गों ।
तन सुतमाल सुलाल लाड़िले लीला सद सदङ्गो ॥१७
रति लोभी रति लम्पटु पटु भट सुरति लालची लोना ।
सुरति लोल लावन निधि लालन रति लय रति ललकोना
लगनातुर मगनी लगनाकर लगन लाभ लगनेशं ।
प्रेमातुर परप्रेम प्रेमदा प्रेम मुदा परमेशं ॥१८॥
परमेश्वर परब्रह्म परापर प्रकृति पार पर ईशं ।
परधामं परब्रह्म परं मति परमारथ पृथ्वीशं ॥
परिपूरण परतत्व तत्वसी परपद परम प्रवीनं ।
प्रति पालक परतीत परीक्षा परिकर पाल करीनं ।१९

महामूर्ति महामंगल मय महाराज माया पर।
महदगुणी मारुत सुत स्वामी मङ्गलनिधि मङ्गल तर ।।
मद इष्टं मद दृष्ट पुष्ट मति अष्टकारि मभिष्टदं।
सुजन सुदृष्ट प्रतिष्ठ मिष्ट वद अष्ट भवन पति वरदं ।।२०

सुभग सिरोमनि सरस साँवरो साही सब सिरमौरं।
सदप्रज्ञं सर्वज्ञं पति सद सद कृतज्ञ गुण गौरं ।।
सद संकल्प अकल्प तल्प पर त्रिभुवन तिलक तरुण तर।
ततु वेता ततुसार ताप हर तम तरनी नलनी भर ।।२१

मदन सहस्र मनोहर मोहन मान्य सुमन सुमवासी।
चित चोरं चिंतामणि चोकस चिन्मय सुचिद विलासी।।
चूड़ामनि चिन्तत फल चिद घन सत्व सच्चिदानन्दं।
चित्त सुचित्र विचित्र पवित्रं चित्रकूट वन चन्दं ।।२२।

सुमन विहारी सरजू मज्जन मन्दाकिनि अनुरागी।
परम पुनीतं मन गोतीतं मित्र परम बड़भागी ।।
दक्ष दाहिनो रक्षक पक्षी साक्षी सब सर्वोपर।
लक्षमणी अपलक्षण हन्ता हनुमन्ता हित मन्तर ।।२३।।

नर पालक नरनाथ नियन्ता नयनीता सुनरेन्द्रं।
महा महीप महत यश धवलं यश सुवितान समुद्रं ।।
अकथ अनायम आप अयोनी अद्भुत अधिकारी अति।
अकल अव्यक्त अनन्त अमन्दं आनन्दं आनन्दति ।।२४।।

अमल अमोघ अलीन अभंगी अमल अदोष अनादं ।
अवतारी अपवर्ग असंख्यं अच्युत अवध्य अवाधं ।।
दीन वन्धु सुख सिन्धु वृन्द सुख चन्द्र वदन चिन्ता हर ।
दीन दयाकर दीन दयालं दीन सुपाल दयाधर ।।२५।।
शरण पाल शरणीय दर्शनिय शरण सुखद सुखदाई ।
अशरण शरण सुसज्जन गाहक शील सिन्धु सग्लाई ।।
सत्य सन्ध सारंसी शुभदं सद शव्दो सु अशेषं ।
साधन सिद्ध प्रसिद्ध प्रगल्भं रिधि सिधि दत्त विशेषं ।।२६
तुरिय तिमिर हर हरी हरीशं हर विधि सेव्य समीचिन ।
ध्यान सुदेश सुधर्मी धर्मा धर्म कथा मन चीन्तिन ।।
धर्मज्ञा धुर धर्म धुरंधर ध्वजा धर्म ध्रुव धैरज ।
सुघन वपुष घन श्याम मुघाती द्युमति गतिरति सालज।।२७
नित्य निरामय निसक निरन्तर नय वेत्ता नव नीता ।
निजाधीन नव वन्दी निर्मल निर्भय निलज सुमीता ।।
विश्व पाल विश्वेश्वर विद्वन विद्यापति पारायन ।
बिभु भाविक वैभव सुभाव वसु भय भीरी भावायन ।।२८
भावन भाय रमन सरपोतं भद्रालय भद्रंकर ।
भद्र गुणी भुवेश्वर भर्त्ता भ्रम भंजन भावन कर ।।
आशुतोष संतोष तोषनी आसा पोषन आसय ।
अन्तरयामी अन्त रहित प्रभु अन्तरेश अन्तरमय ।।२६

ताड़िक हतन उदार मन्जु छवि प्यार पूर पीड़ा हर ।
सिलातार मारीच बिमर्दन मिथिला पूज्य मयाकर ।।
मैथिलेश प्रण पालक धनु धर भृगुपति मान विमोचन ।
नृप मद मथन महद वलवीरा नृप मंडन वर लोचन ।।३०
सभा सौम्य स्वयंवर विजयी विजयवन्त वसुधा भर ।
वृषभ कंध विज्ञान विशारद सुघर सुजान नंद थिर ।।
तृगुन पार विस्तार भूरि भल त्रिकालज्ञ त्रयलोका ।
श्रुति गियतं श्रुति सत्व स्वैतं श्रुति सार हर शोका ।।३१
श्रुति मूलं हृति शूल दुष्ट दल अवल सवल अलवेलो ।
पीताम्बर धर गयगामी वर नरवर नेह नवेलो ।।
अरवीलो गरवीलो छैलो अछलो छलों छवीलो ।
कृश कटि वारो पुष्ट उरस्थल लटक चलन लटकीलो ।।३२
उन्मद रूप अनूप अनोखो उलत सुकेल उसीलो ।
रूप वावरो रूप प्रकाशित रूप निवास रसीलो ।।
रूप रँगीलो रंग रूपती रंग महल नित वासी ।
रंग अहारी रंग विहारी रंग रले रँगरासी ।।३३।।
भरत लषन रिपु सूदन हनुमत चतुर नाम चारो तन ।
चारुशील चिरजीवी चन्दन जगवन्दन दुख कन्दन ।।
शिव अज विष्णु सुसेव्य सार निधि सुफल सकल सेवासिधि
ध्येय ध्यान ध्याता सुख सागर मुनिजन कृत सुकृपानिधि३४

कृपनपाल कृपाकर कामद किंकर केवट कविता ।
रघुकुल कमल रघुत्तम सत्तम परमत्वं तम सविता ॥
रुजहारी उपकारी उरधन अधिकारी ब्रतधारी ।
रंक सु अर्थ समर्थ परत्वं अमित बोधं भ्रम हारी ॥३५
छिति पति छत्र छमाधिर छत्री छेम करं छवि सिन्धं ।
सहजा छोभ स्वछंद अछिद्रं छती वन्श सुगन्धं ।
निगमागम विद निगम नेत पद अंहलादी आलम्बन ।
जोगी जगत प्रकाशक जग पर जक्त गुरू जग थंभन ॥३६
वंक विलोकन दंगु विलासी वक्री कीधर वंका ।
रसिक सिरोमनि रहस्य लीलो निज आनन्द निसंका ॥
लीलाकिर पर तेज तेज सी अति सीतल तरुनी रत ।
कोमल वय कमलाकर सद कृत वृत बेरी कीरत रत ॥३७
शुभ कारन शुभ सन्त सुरालय अशुभ हरन शुभ कोषं ।
नौमि नरोत्तम तत्वमसि त्वामोत्तम नाम निरोषं ॥
निरदम्भी निरलेप निरीहं निरमोही रसमोही ।
व्याध्र विहंडन वेद सुमन्डन वंद्य महारुज योही ॥३८
परमात्तम पुरुषोतम उत्तम जन आतम मम स्वामी ।
दास दरसिमय दरनि दुराशा दरस भद्र दुरधामी ॥
सदा प्रसन्न प्रसिद्ध प्रसंसी पर प्रताप पर वारी ।
वरन प्रसाद उपाध हरन हरि मति सुअगाध अघारी ३८

रमनी रमन पवन सुत सुमिरन श्री निवास सीता सुख ।
सीतास्वाद सिहाइक चाही चैतन चपल सुभावुक ।।
सीता सौरभ भ्रमर भोगिया भव रुज भेषन भारी ।
जानकी भाग विरागी रागी जानकी रंग विहारी ।।४०

सिया सोहायो सुन्दर सेवक सेवक पाल वलाहक ।
सिय वसवर्ती सुरति सलाघ्यत सेवक सदा सहायक ।।
सिय सैली संसर्गीं सीतल सिया सोहाग प्रकासी ।
सुधा धाम नौमीस सुधासर सुधासींव सुखवासी ।।४१

सीता मिश्रित माधुर्योवस मित भाषी मिष्टालय ।
सीता ललितं लुब्धं रति रस शब्द मोद मोदालय ।।
सर्वश्रेय कर श्री मूरति श्री श्री रवनो श्री भवनो ।
श्री सर्वं श्रुति पाल अमोलक श्री प्रद आश्रय रमनो ।।४२

सिय शोभा सुख गोभा श्री मन सिय रति सहज रसेवा ।
सखी सिंगारी सिय जू संमत सिय जू लोचन मेवा ।।
नयनानन्द विलोचन मानिक सखि दृग कन्ज दिनेसा ।
सिय रसमीन सुलीन सिया जस सखि जन कुमुद निसेसा।।४३

सखि अर्चित वर चित्त सुवीना विसद विचक्षन परदा ।
वयसा वित्त विशेष विशोकी विघ्न विदारन सरदा ।।
विविध व्याह हर ब्रह्म नीक वर बाल विनोद वरंधी ।
वैदेही विलसत विनई वर वन्दनीय वय स्यंधी ।।४४

चिन्मय सुख सूक्षम चिद भोगी गौ द्विज हित अवतारी ।
कृपा निकेत सुहेत कनौड़ौ निगम नेत सुविचारी ।।
ईश्वर ईश स्वईच्छाचारी इच्छत प्रद शिक्षा शुभ ।
शुभचागी शुभचिन्त सहोदर शुभ सूचय हरिदुख इभ।।४५

पावन यश मन भावन भ्राता सुख द्रावन दुख दमनो ।
काम कोटि कमनीय क्लेश हर काल कर्म श्रम समनो ।।
सुकृत फल सुकृत जन पुंजसि सुकिया रति दुख कृहन ।
योगी यतन मथन मनमथ मद मन्त्र महामुनि जन धन ।।४६

एकांती ऐश्वयं अव्ययो अमित अमानी मानद ।
असद गिरा सदकार निषगी सरनागति वत्सल सद ।।
मधुर सुवाच माधुरी मंजुल मारतंड कुल दीपसि ।
धनु दमनीय सुधन्वी धन्या ध्वजा सुधौलं धीयसि ।।४७

रहस्य ज्ञान प्रद दल अज्ञानं भाववेश भगवन्ता ।
अपत पती आतुर जन तोषी अपने से आदन्ता ।।
जीव जिवावन जग पावन जो गुन गावन सुख श्रावन ।
मद आश्रय शुभ प्राश्रव सोम्यै शारद सो छवि छावन ।।४८

ईष्टा इष्ट सुश्रेष्ट मिष्ट गुन दुष्ट दलन सठताहन ।
लक्ष्मन जेष्ट वशिष्ट प्रसंसित कष्ट दलन नेष्टापन ।।
मख रक्षक मुनि शोक विमोचन विश्वामित्र सनेही ।
विदित प्रतापी विग्रह गंजन विश्वनाथ थिर गेही । ४६

पतित उधार सँभारक सज्जन सावधान सर्वालय ।
गई वहोर निर्वेद विनायक आरत हरन असंशय ॥
मन प्रेरक मन हारक आतुर हमरे को विश्रामा ।
कृपा कटाक्षी कादर पोरुष कौतुक निधि अभिरामा ॥५०
सुख चय मृदु वय कीरति वर पग्र जयतारथ दयतामय ।
अगम अगोचर अप्रतिहत गति उत्कर्षी आकर्षय ॥
प्रण पालक जन ओर निवाहक दुखहारक सुख जूथा ।
अनँद अकुंठित उत्कंठा फल कान्ता केलि वरूथा ॥५१
महातीरथ दृढ़कारि गूढ़ पद गोप्य दान गुह्यांतर ।
सुरस समूह सिया सुख वेष्टित सीतानेष्ठ स्वतंतर ॥
सौख्य समस्त सुतनु मुख पंकज मस्तक मोर मवासी ।
शील सुमेर सुहेरक सहचर सुखमय सौज सुवासी ॥५२
वनद शब्द वानी सवरी सो वनज वदन वर अंगी ।
वनचर सेव्य सुभील सखा हित केवट विवस प्रसंगी ॥
वचन सुपाल वलेष्ट बिक्रमी अंकुश मन मतसा भर ।
सर्वालिकृत सीता संपति हित अंकुर सुख शंकर ॥५३
हरि पति पति प्रतिपाल प्रदीपित प्रार्थनीक प्रभुता प्रद ।
अधम उधार अनर्थ उथापनि थापन सुखद दया सद ॥
अर्क कुल वनज हर्षकर तर्क विवाद अतर्को ।
पलक निहाल सुतिलक त्रिलोका मुनि जन कोक सुअर्को ॥५४

प्रमदा प्रेम सिया श्रृङ्गारी रसागार रसराजा ।
रसरातो रसमातो रसिकं रस भरता रस भ्राजा ।।
रसरागी राजीव विलोचन श्री रामा रंगालय ।
रस अनन्य रस रास नियन्ता रासेश्वर रस तन मय ।।५५

राम नाम को अन्त न आवै निगम शेष कवि गावै ।
मन की लगन भावना जैसी तैसोइ राम लड़ावे ।।
यह साधन यह सिद्ध हमारो इष्ट नाम गुन गइये ।
और फलन की आस न कीजै रंग महल सुख लहिये ।।५६

श्रम भ्रम संकट सुमिरत अकृत अर्ध नाम सों नासै ।
सहस्र नाम प्रति पाठ पढ़ै यह ते श्री चरन उपासै ।।
राम उपासिक सुनें सुनावें पढ़ि पढ़ि वदन सिहावै ।
कुटिल कुचाली स्वांगी विमुखी मूरख नाक चढ़ावै ।।५७

जे जन इष्ट स्वाद सुख जानें अन्तर लाभ सँभारै ।
कसक विना हर्षे नहिं हित में भजे न हीन विचारै ।।
गुरु सुप्रसाद सिया वल्लभ के नाम सुखद मन भाये ।
कृपा निवास उपासिक गावे मया करी मैं पाये ।।५८

इति श्रीराम सहस्रनाम श्री कृपानिवास स्वामीजी महाराज
।। कृत सम्पूर्णम् ।।
।। शुभं भूयात् ।।



॥ श्रीगुरुवे नमः ॥

॥ श्रीसीतारामाभ्यां नमः ॥

श्रीसीताराम नखसिख

सोरठा

पिंगल में नहिं होस, काव्य रीति जानी नहीं।
मोहि तुम्हार भरोस, श्री विदेह नृप नन्दिनी ॥१
औगुन विस्वाबीस, यद्यपि गुन एको नहीं।
सिय पद रज धरि सीस, प्रेम सखी कह जथा मति ॥२

॥ मत्तगयन्द ॥

चन्चलता सिगरी तजि के थिरह्वै रहु तू यह बात भली है।
सेउ सिये पद पंकज धूरि सजीवनि मूरि विहार थली है ॥
बारहिं बार सिखावति है अपने मन को यह प्रेम अली है।
ठाकुर रामलला हमरे ठकुराइनि श्रीमिथिलेश लली है॥१

घनाक्षरी–

चिन्हित प्रकासमान अंकुसादि चिन्हनितें बसैं प्रेम सखी मध्य अन्तर उरोज के। जाकी नख राजी विधु ह्वै कै सम्भु सीस राजी आँगुरी अमल मान मरदत मनोज के ॥ सरन सिधारैं भव सिंधु तें उधारैं, वे दहकत पुकारैं ये दिवैया मुक्ति मौज के। वानी बारिजासन भवानी औ वृषासन जू रहत सरन सिया चरन सरोज के॥२

एड़ी की ललाई जुत जावक सुहाई मानो कन्चन कटोरी भरी पावक सों ताई है। धरामें धरतपाय नैन तरसाय उठें भूमैं प्रति विंवन की फैलत ललाई है ॥ नूपुर की झालरें जराऊ जोति हीरन कीं देखि प्रेम सखी ताकी उपमा बताई है। आई रघुनाथ की पठाई पाइ गहि रहि संध्या राग रंजित नखत सङ्ग ल्याई है ॥३॥

कैधौं पारिजात के सुमन की ये पाखुरी है जावक सजोग अनुराग रस भीनी हैं। जग चतुराई की कुसलताई पाई तव सुखमा समूह को विभाग विधि कीन्हीं हैं ॥ पति को अतन जानि रति कन्ज ढिग आनि पंचवान वावन की गासी धरि दीन्हीं हैं। विधिहर मेरे दस भालन की भाग थली प्रेम सखी सिया पद आँगुरी नवीनी हैं ॥४॥

परम अशंक ए सशंकर हैं राहु डर दिन दुतिमन्द ए अमन्द तम हारी हैं। वै तो सकलंक ए कलंक अघ दूरि करें वैहैं छपानाथ ए अनाथ नाथ भारी हैं ॥ घटत बढत तिथि पांइ पांइ रात दिन एतो एकरस जोति जागें न्यारी न्यारी हैं। प्रेम सखी मेरी जान सिया पद नखचन्द कोटि कोटि चन्द ते दुचन्द छबिधारी हैं ॥५॥

तापनि सतायो फिरै दशौदिशि धायो जो सरन तकि आयो ताहि अभै पद देतु हैं। इनहीं की आड़ भव

सिंधु पार जाइवे कों प्रेम सखी विरच्यौ बिरंचि श्रुति सेतु हैं ।। पूज्य ए पुरारी के मुरारी की भगति हेतु सेवें सिद्ध जोगी सुर असुर समेतु हैं । जनक लड़ैती जू के गोरे गोल गुलुफ ए दसरथ लाल के चोराये चित लेतु हैं ।।६।।

बडे छोट जीवन के भाग को भँडारा किधौं सुखमा अगार जाहि सेवत सिंगार हैं । बिछुवा को नाद तो हँसत कल हंसनि कों नूपुर की धुनि सुनि मार बेसुमार हैं ।। गूजरी चमक देखि चपला चोरावै गात जेहरि जराय मथि काढ़े रविसार हैं । प्रेम सखी सिया जू के भूषण समेत पाय हमसे गरीब निराधार के अधार हैं ।।७।।

अरसात छन्द–

हैं युग खम्भए कन्चन के पलना पग झूलन आए सिंगार हैं । प्रेम सखी मन डोरी तनी गति हंसन कीसी झुलावत मारहैं ।। गावती गीत अली बिछिया रघुनन्दन नेह नचावन हार हैं । पीर सुढार बनी चिकनी ये विराजत जानुकि जानु उदार हैं ।।८।।

शेश महेश औ बानी बिरंचि थके गुण गावत जेते प्रवीन हैं । सेइ रहे पद कीरज कों सनकादिक जो पद

चाहैं नवीन हैं। प्रेम सखी मनबुद्धि मिलिन्द रहैं सियके पद पंकज लीन हैं ।। देखत पायन की महिमा मुख पाइ नितम्ब भये अतिपीन हैं ।।६।।

घनाक्षरी–

देव नरनारी विधि शक्रत्रिपुरारी प्यारी जुरि जुरि आपुस में कहत प्रवीनी हैं। कन्चन कला की जोति जीती चपलाकी इन मदन लला की अबला की छबि छीनी हैं।। राम रसखानि मन मोहिबे की मोहनी हैं सोहनी जगत प्रीति रीति अति झीनी हैं। नैन तरसात डीठि लाले लचि जात प्रेम सखी बलि जात देखि सिया कटि खीनी है ।।१०।।

मत्तगयन्द छन्द–

प्रेम सखी घों पटम्बर ह्वै परयो पायन आइ सोहागति याकों। बूडे हरे रंग में बिलसैं जमुना जल ज्यौं प्रतिबिम्ब दिया कों।। चारु तनी की घनी सुखमा जिनते न छुटै मन बांधो पिया कों। शोभित है लहँगो कटिमूल हरै अघ शूल दुकुल सिया कों ।।११।।

घनाक्षरी–

देखि छबि रसना की चकित विरंचि कहै हमते न होइ यामें औरैं चतुराई है। एक एक चन्द्रिका में

चन्द्रमा अनेकन की ग्रहन समेति की सिमिटि छवि छाई है ।। सिया कटि मूल राजै दामिनी बिलोकी लाजै धुनि काल हंसन ते अधिक सुहाई है । प्रेम सखी मेरी जान मदन महीप आजु बिश्व के विजय के हेतु दुन्दुभी बजाई है ।।१२।।

सुरतरु पानतें ललित अनुमान जाको इहै धोप्रमान बिधि सिगरी सयानी को । सुखमा को सदन सकल गुण खानि किधों सोहै भाग भजन मदन अभिमानी को । प्रेम सखी प्रेम को पयोधि निधि मेरी जान दया को निधान है धों कर्म मन बानी को । छूटै भवत्रास आसु जननी जठर बासु ध्यावत उदर जो सियाजू जग रानी को ।।१३।।

मत्तगयन्द–

प्रेम सखी मतिमन्द महा सपने कबहूँ नहि देखन पाई । नाभिहि तें उपज्यो विधि बापुरों जाइ कहा मुख चारि सोगाई । बारहि बार विरंचि बधू सब ढूंढि थकीं उपमा नहि पाई । जानत रामलला रसपानि सिया शुभ नाभिकी सुन्दरताई ।।१४।।

कवित्त–

नीलम नीली कसी लसी है मध्य कन्चन के तन जाति कें धौंसिगार पांति साजी है । आई स्याम ताई

की निकाई सबसि मिटि कै जाहि देखि देख रोम रोम पियराजी है ।। झीनि दरसात है विसाल छवि सरसात रूप सुधासर मे सेवारसी विराजी है । प्रेम सखी मेरी जान सुखमा समूह राजी गुनगन राजी धौं सिया की रोम राजी है ।।१४।।

सवैया—

प्रेम सखी सुखमा सरते उमड़ी छवि चारु तरंग भली हैं । प्रेम प्रभा ह्वैत्रिधादरसैं जिनपै परिडीठिह लीन चली है ।। देखेव नैनहि जात कही पिय के चित की विश्राम थली है । धारे मनोहर रूप अली परमा-दिकि धौं सिय की त्रिवली है ।।१५।।

श्रीफल है कि धौं प्रेम सखी ये मनोरथ के फल रामलला के । उन्नतपीन कठोर महाछवि भाजन हैं कि धौं काम कलाके ।। मोहन मन्त्र प्रकासक से जुग सिद्धि प्रसिद्ध हिये कमला के । नैन सरोज कसे पियके ये उरोज नवीन सिया नवला के ।।१६।।

कवित्त—

वोरी रंगनील है किशोरी जू के गोरे गात छवि सरसात देखि कंचुकी सुहाई है । नगन जटित बूढी चारु जरतारिनकी असित निसा में ज्यौं नखत छवि छाई है ।।

रुचि रवनी है नेहसो धेनसनी है जामें सुखमा घनी है प्रेम सखी मनभाई है। उरज नवीन तरुचारी है विहारी दृग मृग फासिवे को प्यारी जारीसी लगाई है ।।१७।।

सवैया–

सोहत नील निचोलन ये घन अन्तर मैं दुति ज्यों चपला की। गाँथे अनेक अमोलनगें जिन छीनि लई छवि चन्द्र कलाकी ।। प्रेम सखी मुकता गन स्वच्चलरे-लरकें विरची कमला की ।। दीठि हलीन चली सिय के उरहार बिलोकत रामलला की ।।१८।

वाहु सिया की विसाल सखी सुकुमारी मृनालतें कोमलता है। कंचन रन्चन जानि परै परसै विनु क्यों रंग की समता है ।। प्रेम सखी अवलम्बनु है हरिदास-नकी प्रिय कल्पलता है। मालसी लालगिरे बिलसै दरसै घन अन्तर ज्यौंतडिता है ।।१६।।

कवित्त–

कंवुक कपोत सकुचात जात देखि देखि सियाजू के कंठकी निकाई अधिकाई है। स्वच्छताई सुकुमार ताई वनि आई जाके पानपीक वाहिरे ह्वै झलकत झाई है ।। मनि मुकतान के अनेक भाँति भूषन सों भूषित अधिक ते अधिक छवि छाई है। प्रेमसखी मेरी जान सुखमा सुदेसय है पियमन अचल जगीर करि पाई है ।।२

सवैया–

आनन इन्दु अनेकन की छवि छीनि लई सुखमा वर जोरें। दैवन की नर देवन की सिय को मुख देखि त्रियात्रिन तोरें ।। दीठिसों मैलोन होइ कहूँ सकुचाइ बधू सिगरी दिग मोरें । प्रेमसखी पिय के चषचोर करैं पलकैं परि पाइ निहोरैं ।।२१।।

कवित्त–

प्रेम वसुधा से सिय अधर सुधा से वैन ललित सुधा से प्रिय अधिक सुधा से हैं । सहज हँसो हैं अनखो हैं न कदापि होत विवासे अरुन हैं कमल मोद वासे हैं ।। माधुरी अनूप जानै प्रीतम के मन नैंन रहत निरन्तर जो पियत पियासे हैं । देखि देखि प्रेम सखी वारने करत प्रान जनम अनेक के अखिल अघनासे हैं ।।२२।।

सवैया–

दन्तन की अवली सिय की सम कुन्दकी पाखुरी के अनुमान हैं । कोरैं कहूँ मुसुकात कढैं मनि हीरन के दवि जात गुमान हैं ।। चीकने चौगुने सौगुने सेत विलोकि थके विधि से बुधिमान हैं । प्रेम सखी केहि भाँति कहैं मति मन्द महा सब भाँति अजान हैं ।।२३।।

कवित्त–

जगमें निकाई सुकनासिकाई पाई सिय नासिका निकाई पैं सिमिटि छबि आई हैं। मुकुता कलित सोहै ललित ललाम जामें लटकन लटकि अधर छवि छाई है।। हलनि हिये में वाकी भरि गई प्रेमसखी जातन अनेकहूं कढत कठिनाई हैं। कैसे करि गावै बुधि बानीमो न आवै छवि देखे वनि आवै जिन पाई तिन पाई है ।।२४

नैन अनिआरे तारे पुंडरीक पान सारे सिय पूतरीन पै द्विरेफ गनवारे हैं। कछुक जरारे सील सागर सुधा सुधारे वरुनी विशाल धारे जोर छोर वारे हैं ।। दीन पै सनेह वारे प्रीतम के प्रान प्यारे उपमा न पावत विरंचि रचि हारे हैं । मीन मृग खञ्जन बनाए विधि प्रेम सखी वारि वन व्योम बसैं लज्जित विचारे हैं ।।२५

सवैया–

वा अनियारी विलोकनि की छबि गाइबे को विधि की बुधि हीन है। प्रेम सखी मिथिलेश सुता की कटाक्ष के कोर भए गुन तीन है। मीचु समान दशानन की सुरधेनु समानि सुपालत दीन है। रूप सुधा की तरंगिनी सो निशिद्योस जहाँ हरि को मन मीन है ।।२६

कवित्त–

रेखा सीस घनस्याम कुटिल कमान ऐसी सुरमुनि वैभव वखानै चारो वेद हैं। ऊंचीसी करत विधि आदि जग होत सब नेकु ढीली होत ह्वै जात गुन छेद हैं॥ करत हरत प्रति पालिवे को प्रेम सखी कोटि अंडजाके कहूँ रन्चकन खेद हैं। भृकुटी विलास महारानी जू को मेरी जान हरि मन मृग वाँधवे को फंद भेद हैं॥२७॥

सवैया–

भाल बिसाल सिया को सखी सुख भाजन सो छवि पूरि रह्यो है। भागसुहाग को पीतम पार न पावत जाते अपार कह्यो है॥ भूषन भूषित प्रेम सखी उपमा न लह्यो विधि हेरि रह्यो है। कोटि उपाय करैं कबहूं नरसों करसों विधु जात गह्यो है॥२८॥

कवित्त–

अमल कपोल पैंरी तोरसों बखानै कौन देखैं वनि आवत तरौनन समेत हैं ढके नील सारीसों किनारी जरतारी कोर अलकैं वलित ह्वै अधिक छवि देत हैं॥ तरनि तनूजा बिधु व्याल लघु लागे मोहि उपमा न दीन्ही प्रेम सखी एहि हेत हैं। एई बड़भागी जाहि सियछवि प्रिय लागी परम अभागी जे अनतचित देतहैं।२६

मेचक सघन सुकुमार हैं सेवार हूँ ते सिया जू के सीस के विराजत विसाल बार। मोर पखवार तमधार मरकत तार पन्नग कुमार रचे कोटि कोटि करतार। उपमाके हेत प्रेमसखी वुधिवान प्रभु करत रहत नित नए नए उपचार ॥ मोर पच्छ डारै त्वचपन्नग नवीन धारै मन मैं न आवै तौ वनावै विधि वार वार ।३०॥

गाँथे सेत अरुन कुसुमगन प्रेम सखी चारि फल देनी जाकी उपमा त्रिवेनी है। कन्चन सिलापै काली व्यालीसी विराज मान सुखमा समूह धौं द्वि रेफन की श्रेनी है ॥ सकल सिंगार सार धारसी धसी है कीधौं पीठि पै लगाइ राखी मदन निसेनी है। मणि मुक्तान सों विभूषित विविध भाँति सिया जू की राजत विलास तर बेनी है ॥३१॥

झीनीहू ते झीनी है नबीनी नित नित होत नील रंग सारी प्यारी सुधा सों सुधारी है। सब सुखकारी जापैं मेघमाला वारि डारी दामिनी सी चहूँघा किनारी जरतारी है ॥ भागन की भाग ऐसी सुखमा सोहाग ऐसी सिया जू कृपा कै जाहि निज तन धारी है। उपमा न आवै तौ बतावै कैसी प्रेम सखी देखि देखि होत बार बार बलिहारी है ॥३२॥

सवैया–

है जलकी तन या कमला विमला पितु तो जड जीउ पषान है। वानी रहै बकबादिन में पति सोच दुखी रति जानै जहान है ।। प्रेम सखी मिथिला धिपकी तनया उपमा कहँ को जग आन है। है न भई नहिं होनेउ है तिहुँलोक तिया सिय रूप समान है ।।३३।।

द्वै रसना तन की सुखमा उपमा कहवे कहँ कीन्हीं फनीश हैं। नाकहि जाइ रहे सकुचाइ हिये अनखाइ किये बहु शीश हैं ।। शेष सिया पग के नख की छबि नूतन गाइ थके जगदीश हैं। प्रेम सखी बल कोटि करै मकरी सों कहूं तरि जात न दीस है ।।३४।।

।। दोहा ।।

सिय छबि उरमै पीठ कै उफनाती भरि पूरि।
प्रेम सखी तासों कही शिर धरि सिय पद धूरि ।।१

प्रेम सखी तिया दृग लगे अँग रँग मैलो जौन।
बचन ठीम सँमँदये सहै सिया बिन कौन ।।२।।

श्लोक–ऐश्वर्यरमक्षय गतिं परमपदं वा कस्मैचिदंजलिभरेवहते वितित्य। अस्मैर्नकिंचिदुचितं कृतमित्यपंत्वलज्जसेक व्ययकोपमुदारभावः। १।।

॥ दोहा ॥

मीठेऊ मीठे लगे फल सेवरी के राम।
प्रेम सखी कै पैन्हियें लाल कवित की दाम ॥१
प्रेम सखी सब जग कहै, बार बार घनश्याम।
कहां बलाहक बापुरो, कहां राम अभिराम ॥२

सवैया–

नितही कटि पीत दुकूल लसै बिजुरी बदरान छपै क्षन में। उर में मणि माल बिहार करैं बक पांति उडाय चलै तिन में ॥ अँग श्यामता प्यारे की प्रेमसखी रस एक रहै न रहै उनमें। छबि देखिये जैसी लला तन में दुति पाइयै वैसी कहूँ घन में ॥१॥

घनाक्षरी–

रतन किरीट देखि प्यारे रघुनाथजू को प्रेमसखी उर चटपटी सी परत है। जागत असन सैन जगमग जोती वाकी हिये में बसत नेंक टारे न टरत है ॥ खिरकी में फिरकी सी फिरत बधूटी सब उर में उमँगि मन धीर ना धरत है। सुखमा को धाम अभिरामहूँ को अभिराम कोटि रवि सोम के गुमान कों हरत है ॥२॥

श्रेनी धौ द्विरेफन की दिग कंज वाहि चली पलग कुमारी धौं मयंक सुधा पागैंरी। मथि कै सिंगारसार

बिधि नैनिकारयो प्रभु सीस पर ढार्यो धसी धारें जोति जागेंरी ।। प्रेम सखी मेरी जान हृषीकेस केस ह्वै कै सुखमा समूह मुख छ्वै कै अनुरागैंरी । कुंडल समीप कारी घुघुरारी आली अलकैं बिलोकि नेकु पलकैं न लागैंरी ।।३।।

कुंडलकी झलक बिलोकि रघुनाथ जू की चित चकचौंधे दृग चुम्बक से लागे हैं । मन्द मन्द डोलें मेरे हियतें न डोलै नेकु लोकलाज आदिक भभरि सब भागे हैं ।। नींद भूख प्यास जिन इन्द्रीगण स्वास जीते तेऊ छबि देखि तन मन अनुरागे हैं । प्रेम सखी तियन के कहियै कठिन प्रान पलकन ओट होत रहत अभागे हैं।।४

सवैया–

दर्पन से प्रभुलोल कपोल सखी अवलोकत ही रहिये । नैन समेत फँसे मन बुद्धि कहो उपमा अब क्यों कहिये ।। अंचल ओंट भये सजनी लघु मीन ज्यौंवारि विनोद हिये । प्रेम सखी हिय माह बसै तिनको फिरि साधन का चाहिये ।।५।।

भाल बिसाल सियाबर को दृग देखि कुअंक मिटैं निज भाल के । कुंकुम की रचना कबहुं हरि चन्दन चित्र सुगन्ध रसाल के ।। भाग बड़े तिनके कहिये जे

धरें तुलसीदल मस्तक लाल के । प्रेम पयोधि में प्रेम सखी परै तोरि फँदा सिगरे जगजाल के ।।६।।

कवित्त–

प्रेम सखी प्रमदा कहत नर देवन की फूल धनु-धारी कहा करत बिचारो है । कर सर धनुष चढ़ावें ऐंचि कान लावै मारै तब जिन्है करि पावें मतवारो है।। रेखा शीश घनश्याम जीवे सावधानहूँ को तनक बिलास जाके परबश पारो है । बेधै अनियारे दृग अचरज यह राम भृकुटी कुटिल हिये बेधति हमारो है ।।७।

सवैया–

राजिव नैंन के नैनन की छबि जातन नैन बिलोकि भये धनि । तैसै बिसाल बडी वरुनी दृग सुन्दरता सखि आई सबै बनि ।। प्रेम सखी जिनकी सुखमा जुग कोटि लों शेश न आपु सकै गनि । मीन मृगा अरु खंजन वापुरे दै उपमा वदनाम करौ जनि ।।८।।

प्रान पियारे की प्रेम सखी शुभ नासिका पैंजब डीठि परैरी । उन्नत स्वच्छ सुढार महाहिय ते छबि नेकु न टारे टरैरी ।। कोटि मनोज की सुन्दरता जिनपै बलिहारि कैं दूरि धरैंरी । आली बुलाक की डोलनिकी सुधि आवत मोहिं सुमार करैरी ।।६।।

कवित्त–

राते राते अधर सुधा से वरसत वैन चकित बिलोकै जाहि फूल धनुधारी है। वंधुक सुमन की ललाई यौ सिमिटि आई जामै फसि रही डीठि टरत न टारी है ।। देखे वनिआवै कहि आवै कैसे प्रेमसखी जानत रसिक जो परम अधिकारी है । चन्द्रमा मयूषहू तें मधुर पियूषहूँ तें प्यारे को अधर मधु पियत पियारी है ।।१०

प्यारे के दसन देखि देह दसा भूलि जात कुन्द पखुरीन तें अधिक छवि वाढी है । रंचक कढ़त कोर दामिनी सी दौर दौर दाड़िम दसन वारी ठौर ठौर ठारी है ।। पलकैं न लागै रोम रोम अनुरागैं मानो चित्रकीसी पूतरी चितेरे लिखि काढी है । लोकलाज छूटी प्रेमसखी कुल कानि टूटी गरेपरी राम मृदु हाँस फाँस गाढी है ।।११।।

आछे आछे मैंन मैंन वारतें सरस पैन तीनों ताप छूटैं नेकु पावत दरस है। आरसी से अमल कपोल गोल चन्चल हैं झलकत झाई मध्य कुण्डल परस हैं ।। चिबुक श्रवण भाल नासिका बिलोकि आली पलकें परत मानो बीतत बरस हैं । आनन्द के कन्दहूँ ते नील अरविन्दहूँ ते रामचन्द्र मुखन्द्र चन्द्रो तें सरस हैं ।।१२।।

प्रेम सखी गाइ गाइ छवि नित नई नई पावत न पार बुद्धिवानी सत माथ की। विधना चितेरा कीन्हे जगत विचित्र चित्र पूतरी सी ह्वै रह्यो कलम धरि हाथ की॥ कंवुदर कण्ठ ते निकाई अधिकाई यह कहत वधूटी देखि देवन के साथ की। सुखमा समूह सींवाँ सकल सिंगार सींवा गुनगन सिंधु सींवा ग्रीवा रघुनाथ की॥१३॥

सवैया–

उन्नत अन्श विशाल भुजा रघुनाथ की मानो सिंगार की धार हैं। दुष्टप्लवंग भुअंग मसी द्विज दीनन की पितु मात अधार हैं॥ भूषन भूषित प्रेम सखी सिय के हिय की अतिसय प्रिय हार हैं। बान धरे धनु शोभित हैं दलै दासन के दुख दीह अपार हैं॥१४॥

कवित्त–

आयत विसाल उर प्यारे रघुनाथ जू को विधना विसाती छबि हाटसी पसारे हैं। मनि मुकुतान के विराजत अमोल माल पाँति पांति आए धों सिमिटि नभ तारे हैं॥ वैजंती वनमाल तुलसी सुमन माल कौस्तुभादि करत प्रकास न्यारे न्यारे हैं। वेद तत्ववोधक सिया की मध्य रेख सजै प्रेम सखी जापै तृण वारि फेरि डारे हैं॥१५॥

नाभी की निकाई जाति कौन पहँ गाई जातें उपजैं विरंचि जो पसारे जगजाल हैं। रूप सुधा वापिसी विराजत गँभीर धीर रोमन की राजी जापै सूक्षम से बाल हैं।। त्रिबली निसेनी सी अधिक सुख देनी श्रेनी हंसन की आवत विचित्र मनी माल हैं। प्रेमसखी मेरी जान सुदृढ वनायो यह पादप सिंगार को ललित आल बाल हैं ।।१६।।

सुखमा सदन जाहि सहस; वदन कहैं तनु मध्य बारे सब लज्जित विचारे हैं। विधु से दुकूल मूल मूल सो उखारे लेत त्रियनि विलोकि कै तिनूका तोरि डारे हैं।। जात रूप किंकिनी जडाऊ मनि हीरन की शोभा करि बैठे आनि मानो ग्रह तारे हैं। प्रेम सखी रामजू की सूक्ष्म सुढार कटि देखत विरंचि धरि अकल किनारे हैं ।।१७।।

जंघा जानु युगुल विलोकि रघुवीर जू की उपमा को विरचि विरंचि पछितात हैं। कदली के खम्भ जे बनाए बहु तेरे तेतौ मानि लघु आपुको कम्पत पात पात हैं ।।मत्त गजराजन के कीन्हें सुण्डा दण्ड फेर वापुरे लजाय कै निकारि दए दांत हैं। विधिसो न आवै तौ बतावैं कैसे प्रेमसखी इनकी समान मोहि एई दरसात हैं ।।१८।।

Scanned by CamScanner

सवैया—

गोल मनोहर श्री रघुनाथ के गुल्फ विराजत सुन्दर गूढ हैं। लालित हैं कमला करसों मनि नूपुर आदि सिगार अरूढ़ हैं ॥ वेद पुरान पढे तो कहा तिन को कहिये अति मूढसो मूढ हैं। प्रेम सखी जिनसे ये नहीं ते बनाइ विरंचि धरैं नरऊढ हैं ॥१९॥

कवित्त—

कोमल अमल मंजु राम जू के पायन की आँगुरी सघन राजैं सुखमा कतारैं सी। भुगुति मुकुति की बिराजी शुभ राजी किधौं नखपत्र सहित सिगार तरु डारैं सी ॥ पुन्य पात्र पूरन ह्वै उमगि उमगि आई सब सुखदायक अमृत जल धारैं सीं। प्रेमसखी मेरी जान दया दस रूप धारैं पाइ गृह द्वार आइ दीनन पुकारैंसी ॥२०॥

चित्रित विचित्र एक एकतें अधिक एक अंकुशादि चिन्हन की छवि न्यारी न्यारी हैं। तल अरविंदतें अरुन मंजु कोमल हैं मकरंद पूरन अभय ब्रतधारी हैं ॥ सुजस पराग मोद दसौ दिसा फैलि रह्यो दौरि दौरि आवैं भौर भक्त अधिकारी है। माता से पिता से वन्धु आपद सखा से प्रेम सखी के उपाय रामपाय हितकारी है ॥२१

कलपलता के सिद्धि दायक कलप तरु काम धेनु कामना के पूरन करन है। तीनि लोक चाहत कृपा कटाक्ष कमला की कमला सदाई जाकी सेवत सरन हैं ॥ चिंतामनि चिंता के हरन हारे प्रेम सखी तीरथ जनक वरवारिज वरन हैं। नख विधु पूषन समन सब दूषन ये रघुवंश भूषन के राजत चरन है ॥२२॥

परम पुनीत राम पायन की पादुका है धारें जुग रूप परमारथ अरथ की। नगन जटित प्रेम सखी छवि धाम ऐसी आपने प्रकास जोति जीते रविरथ की ॥ कौशिल्यादि रानी दास दासिन के पान की जमानसी पठाई समरथ की। महिमा अपार कोउ पावत न पारावार भई सोकसागरकी नवका भरथ की ॥२३॥

करम कठिन रोग दूरि करवे के हेत औषधि बनाई है सजीवनि की भूरिकी। परसि निरोग भई गौतम की नारी जिन ओढनी सी ऐंचिडारी सिला अघभूरि की ॥ जल के किनूका गिनि सिगरे बताउँ महि रज बारू गिनि आंउँ नेरे अरु दूरिकी। प्रेम सखी बानी सकुचानी कहै बार बार महिमा अपार राम पायन के धूरिकी ॥२४॥

सोरठा–

सो रघुवर पद रेनु, प्रेम सखी निज सिर धरैं।
दासन की सुरधेनु, जाहि निगम आगम कहै ।।

सवैया–

नव अंवुद ते तन जोति बड़ीं सिगरे अङ्ग व्याह के साज लसैं। मुख की उपमा कवि कौन कहै मुसुकानि सुधारस सेव रसैं।। पटपीत सौं जानकी चूँनरीसौ शुभ गांठि विलोकत चित्त फसैं। यह दूलह रूप सिया वर की निति प्रेमसखी उरमाह वसैं ।।२५।।

।। दोहा ।।

अन्स परस्पर भुज धरे, निसि दिन पूरन काम।
प्रेमसखी के उर वसैं, सीयराम छवि धाम ।।१।।

।। शुभं भूयात् ।।



॥ श्रीगुरुवे नमः ॥

॥ श्रीसीतारामाभ्यां नमः ॥

श्रीसीताराम सुखमा विलास

श्रीसीताराम शरण (रसरङ्गमणि) कृत

दामिनी सी गोरी अभिरामिनी करोरी रति, स्वामिनी हैं मोरी गति गामिनी गजेश की। कंचुक कसोरी नील बसन लसोरी अंग, भूषण अथोरी संग सुखमा सुदेश की ॥ आनन अँजोरी रही फैलि चहुँओरी, रसरङ्गमणि खोरी निशा नाशिनी अशेश की। प्रीति रस बोरी हँसि हेरि दृग कोरी, करैं राम चित्त चोरी श्री किशोरी मिथिलेश की ॥१॥

॥ माँग ॥

सिर चन्द्रिका चारू लसी रसरंग मणि, लखि कैं चख भै बड़भाग है। जोति जगै गहि मोतिन की बर, ज्यों तम तोम में तारे उजाग हैं॥ जाहि मनाय उमादि रमा नितही, निज माँग को माँगैं सोहाग है। सेन्दुर पूरित भूरि भरी छवि, सिया सोहागिनि की शुभमाँग है॥

॥ बेणी ॥

नागिन की उपमा अनुरागिन के मन में नहीं भावति देनी। कन्चन शैल सिगार की धारि किधौं रसरङ्ग मणि अलि श्रेनी॥ रेशमलाल गुहे सित फूल, लसी ज्यों महा सुखमा की त्रिवेनी। बल्लभ के विरचे अतिकेस, विदेह लली की विराजति बेनी॥३॥

॥ भाल ॥

उज्जल चारु सु चन्दन चित्रित, बन्दन विन्दु अमन्द उदार हैं। भाग को भाजन साजन प्रेम को, हेम पटा कि सोहाग अगार हैं॥ अर्ध शशी वासीकर जंत्र, परेसहुँ को बसकार अपार हैं। शोभा धनी रसरङ्ग मणि, मिथिलेश लली को ललाम लिलार हैं॥४॥

विशद विशाल सातैं शशिचक्र बाल मानो मदन सु ढाल पास पाटी रचे बाल हैं। बेन्दा विन्दु लाल जैसे भौम भानु बाल तैसे, तिलक रसाल किन्हे आप राम-लाल हैं॥ दीन पै दयाल कहि जासु यश जाल भयो, काग ते मराल रसराम मणि हाल हैं। भाग को उताल कै सुहाग शोभा शाल राम मन मीन ताल भूमि कन्य काको भाल है॥५॥

।। मुख ।।

बन्धुक बिन्द्रुम बिम्ब जपा, अरुने मधुरे अधरान पै वारो दामिनी दाड़िम कुन्दकली, दशनावलि की दुति पै बलिहारो ।। बैनन पै रसरंग मणि, पिक बैन निछावरि को करि डारो। आनन पै सिय के शशि कोटिन, दूर पवारि कै वारि उतारो ।।६।।

।। नयन ।।

खन्जन मान विभजंन श्यामल, कन्ज मनो सुखमा सरसी के। भौंह कमान विलोकनि बान, विभाव भरे मन हारक पी के ।। कोमल कोटि कृपा की कटाक्ष, मणि रसरंग पै कारक नीके। राघव रन्जन अन्जन मन्जु, विशाल विलोचन हैं श्री सी के ।।७।।

शोभा अवली के वर बंक बरुनी के कन्ज काम सरसी के राम सुमन अली के हैं। ऐसे न मृगी के न सची के भारती के न सती के विष्णु तीके न रति के निर्विली के हैं ।। सौम्य कारुनी के भरे सील सु अमी के, सम पोषक ससी के भक्त कैरव कली के हैं जंत्र से बसी के बस कारक सु पी के, रस राम स्वामिनी के नैन नीके मैथिली के हैं ।।८।।

प्रीति भरे रीति भरे रसराम नीति भरे, रति पति जीति भरे भद्र अवली के हैं। सुख भरे सील भरे अन्जन रसील भरे, लाज रसराज भरे रमता केलीके हैं ।। विसद विलास भरे स्याम राम भास भरे, सुजन सुपास भरे सुखमा थली के हैं। रूप के उमंग भरे करूना तरंग भरे, नैना भक्ति दैना श्री सुनैना की लली के है ।।९।।

॥ नासिका ॥

लेत सुख स्वास आस पास फैलती सुवास जासु शोभा देखि सुक नाशिका भै दासिका। तिल को प्रसून काम तून रस राममणि ऐसी अभिराम कहाँ उपमा उदासिका ।। ललित लवंग लसै कबहूँ सु मोरनथ कबहूँ सु बेसरी बुलाक की विलासिका। सुखमा की सागरी औ उन्नत उजागरी है, आगरी सुढार सिया नागरी की नाशिका ।।१०।।

सुक नासिका ते सिय नासिका नीक लखे रति लाजि रही लचि लचि कै। बर बेसरी बेस विराजि रही, झुलनी छबि छाजि रही नचि कै ।। रसरंग मणि मधुरे अधरानन बीरी सु भ्राजि रही रचि कै। मुसुक्यान सुजान पिया हिय मैं सुख सम्पति साजि रही सचि कै ।।११

॥ दशन ॥

रद के बसन पान पीक परसन बिंब बन्धुक तसन रसरंग बरसन है। मन्द विहँसन चन्द किरण हसन बैन मिसु पियसन प्रेम पोषनी रसन है॥ प्रात के उसन ज्यों बुलाक विलसन हेम हन्स के अशन युत बेसरी लसन है। पंगति गसन राम मन निवसन, बिज्जु द्युति दरशन दिव्य सिय के दसन है॥१२॥

॥ कण्ठ ॥

कोमल औ कल स्वच्छ झला झल, राजित रेख महा छवि सींवा। भूषन भूरि लसैं रसरंग मनी, मुक्ता के अमोल अतीवां॥ केलि कला की अदा उनमीलनि, हीलनि राम सुजान की जीवां। कंबु कपोती सु कण्ठ लजै, लखि कै रघुनन्दन गोरिक ग्रीवां॥१३॥

रेख रमनीक ताई रंचक सु कम्बु पाई, पाई कछु ढुरनि कपोतिका को कंठ है। बैन विज्ञताई बानी, बीना ने तनक पाई, पाई कलताई नेकु कोकिला को कंठ है॥ सुजस सुनाई रसराम मनि जस पाई, भूषन दें जासु राम भाई भे सुकंठ है। कौसलेस कंठ मिलैं जासों सोतकंठ, ऐसो शोभा गुन गंठ भूमि कन्यका को कंठ है॥१४॥

॥ बाँह ॥

चारू महा सुकुमार सुढार, हरे दुति हेम तथा तड़िता की । कञ्ज मृनाल रसाल किधौ, युग धार लसै सुखमा सरिता की ॥ दैनि अभैं सुरलोक उभैं, रसरंग मणि सम कल्प लता की । राम प्रिया गर की वर हार सी, बाहु उदार विदेह सुता की ॥१५॥

मन्जुल मृणाल सी सु चम्पक की माला मानो रामलला काज रची कमला लया की है । कन्चन विचारो आगि अन्चन तपत तऊ, रन्चक न पावै रंग समता सु याकी है ॥ अंगदादि भूषन विभूषित अनेक विधि, सिधि रसराम मनि दायिनी दया की हैं । विदित उदारता अनल्प कल्प लतिका ते, बन्दौं दोनों बहियाँ विदेह तनया की हैं ॥१६॥

॥ पाणि ॥

अतिसै अरुन अनुराग के अवास ऐसे नवल असोक दलसैसे सुकुमारी को । अंगुलिन अंगुलीक मंडित सु मंगलीक तैसे नख अङ्ग लीक कारक बिहारी के ॥ दानी देवतरु अनुहारी दास दोस हारी, दीन दया कारी सम कोटि महतारी के । लसैं रसराम मनि सीस पै असीस मिसु, मन्जु पानि पंकज परेस रामप्यारीके॥१७

॥ वक्षोज ॥

रम्भ सु दुन्दुभी सिंह सुधा रस, श्री फल के उपमेय जे अङ्ग है। आन ते नाहिन जानि सकै, न बखानि सकै सु मणि रसरंग है। जानत केवल रामहि एक, कहै न सोऊ कोउ और के संग है। याहि विचार उचार भयो, सिय की सुखमा के समास प्रसंग है॥१८

॥ सर्व देह ॥

सोन सो सुन्दरताई लसैं औ ससि सितलाई प्रभा अमलीकी। दामिनि ओप मनी रसरंग मृदुल सुगन्धिहु चम्पकली की। कल्पलतासी लसैं लहरानी अनूपम लाल तमाल रली की। ज्यों छवि गेह सनेह की दीप दिपै, दुति देह विदेह लली की ॥१९॥

॥ साड़ी ॥

झीन रंगीन नवीन नितै, ज्यों सिंगार घटा सुखमा बरसाती। कन्चन तार किनारी रची, कल स्यामल राम छटा दरसाती॥ ताहि ते प्यारीं जु प्यार समेत, सदा निज अङ्गन सों परसाती। क्यौं बरनै रसरंगमनि जस सारि सिया तन में सरसाती ॥२०॥

॥ पद पंकज ॥

लाल रसाल महा उर मण्डित, दासन के दुख दोष विनासी। शारद सिन्धु सुता गिरिजा जिनको,

नित पूजहिं प्रेम प्रकासी । वेद को मूलसो नूपुर नाद जगें नख जोति सु ब्रह्म प्रभा सी । राम प्रिया पद कंज ते ईस, रसरङ्ग मणी हिय कन्ज विकासी ॥२१॥

जेहरी जटित मनि मोतिन कलित कल, घुघुंरू रटित मुनि मन के हरन हैं । जावक विचित्र छवि छावक मांजीर, बोलै मार हंस सावक ह्वै सम्भु के डरण हैं ॥ अंगुली कमल दल मन्जुल अमल नख, रस राम मनि मल हरण सरण है । झमकि धरण मन्द मन्द पद धरण, पिय मुद के भरण सिय स्वामिनी चरण है॥२२

। अंगुली ॥

अगुलि रामप्रिया पद कन्ज की, मन्जुल मङ्गल की कर वाहै । नासन दासन के दुख के नख, भूरि सु भागन के भर वाहै ॥ रेख प्रकाश भरे रसरंग मनि तम मोह मयी हर वाहै । व्योम के तारनहूँ ते अपार, अधीन के तारन त्यों तर वाहै ॥२३॥

॥ पद नख ॥

है दशहूँ उपनिषद सार की तेज दसौ अवतारहिं भ्राजैं । कै दसहूँ दिग पालन भालन के वर मानिक ये छवि छाजै ॥ ऐ कि प्रकाश स्वरूप लगी पग सो दसधा भगती सुख साजै । की रस रंगमनी सिय पायन के सुदसौ नख सुन्दर राजै ॥२४॥

नख जोति प्रभा परब्रह्म विभाति, सु भाविक वेदन सो बद है। तम नासन दासन के उर कन्ज के विकासन भासन के हद है।। गुन गेह सनेह सने जन के, मन के मुद, मङ्गल के प्रद है। रसराममनी अधनी के धनी, धन जीवन राम सिया पद है ।।२५।।

।। पद तल ।।

जोहिये न जावक जपा बंधूक विद्रुम मे रजो गुन नवल रसाल द्रुम दल मैं। किसुंक सुमन मैं न इन्द्र वधू तन मैं न वन्दन कुसुंभ हूँ गुलाब गिरा जल मैं ।। बिंबहु के फर मैं न बाल दिवाकर मैं न, रति के अधर में न मंजुल कमल मैं। ऐसी कोमलाई औ ओ ललाई न सोहाई कहूँ, जैसी रसराम मनि सीता पद तल मैं ।।२६।।

।। पातिव्रत ।।

ये हो राम प्राण प्यारी रावरो सोहाग भाग, भली भाँति भनत सु भारती हूँ लजि जात। सिवहु अगम स्वामि रूप सो तिहारी कृपा, रसराम मनि मन सुगमहि सटि जात ।। आपको सुजस गान नाम को सुनत कान, राघव सुजान रोम रोम प्रेम पटि जात। तुमहीं निहारि नाथ सुख न समात, अङ्ग अङ्ग विकसात केते कंचुक सु फटि जात ।।२७।

॥ प्रभाव ॥

दिव्य देवतानी कर जोरे वासवानी, भौंहँ जोहति भवानी, गुन गावैं वर बानी हैं। सेवैं सनमानी रिद्धि सिद्धि बे प्रमानी, रमा रति मोह मानी भूलमाया हूँ बिकानी है॥ महिमा महानी कहैं नेति वेद ज्ञानी, गुरुदेव की बखानी रसराम मनि जानी है। रामरस दानी संग राजै सुख सानी, ब्रह्म रूपा शक्ति खानी ऐसी सीता महारानी हैं॥२८॥

॥ श्री युगल सरकार की जूती ॥

काम को जीभ को कोमल भीतर, बाहिर हेम रची मजुब्रूती। राम सिया पद की सहचारिनि, चारिहुँ मुक्ति की चारों प्रसूती॥ जो प्रभु नाहि मिलै ये मिलैं तो मिलान बराबर ज्यों वर दूती। ज नसु माल मनी रसरंग की जानकी जान की जान की जूती॥२९

॥ पंकज ॥

धार कहै कुशलादि सु चिन्ह, सु धार कहै बिगरे जन काज के। गौतम नारि उधारक तारक, त्यों भव सिन्धु समान जहाज के। ताप निवारक शीतल कारक है नख चन्द्र सदा रघुराज के। पालक है रसरंग मनी, पद पंकज राम गरीब नेवाज के॥३०॥

अतिसै अरुण बिम्ब बारिज बरण रेख, रवि के किरण तम मोह के हरण हैं। सिला उधरण दुख दारुण दरण, धोये जनक चरण हर उर अभरण हैं ।। विस्व के भरण नख नूपुर धरण एई, तारण तरण रस राम के करण हैं ।। किये सुमिरण देत चारिहु फरण, असरण के सरण रामचन्द्र के चरण हैं ।।३१।।

।। पद तल ।।

कोमल कमल औ रसाल नव दल इन सम मखमल त्यों गुलाबहूँ न भल है। रेख झलाझल रसराम मनि मल हरि करत विमल देय सरन सबल हैं ।। ध्यावें छोहि छल जन पावें चारों फल, धावें सुजस धवल तरैं भव सिन्धु जल हैं । छटा पल पल पर निकरै नवल, सुख सुखमा के थल सीतापति पद तल हैं ।।३२

।। पीठ ।।

अंगुली अंगुष्ठ महा मंगलीक सुष्ट, मन्जु मंगल बलिष्ट इव नख जोति श्रृष्ट है। गुलुफ गरिष्ट तोड़ा नूपुर वरिष्ट नाद, मन हरमिष्ट जनु बोलै हंस मृष्ट है ।। जावक सुजुष्ट चित्र रचना विसिष्ट होत, ध्याये धरमिष्ट जन अतिहूँ निकृष्ट है। नासन अनिष्ट रस राममनि इष्ट सम, काम कूर्म पृष्ट पुष्ट रामपद पृष्टहै।।३३

॥ जंघ ॥

जानु जुग जंघ मन्जु मरकत खम्भ तिमि करि कर रंभ हीन उपमा सु तीन हैं। कटि अति छीन छवि छकित अछीन कियो, केहरीन दीन ते दरीन वास लीन हैं॥ किंकनी ललित कलनाद ते कलित, पटपीत अमलित झलाझलित नवीन हैं। सोहैं राम अङ्ग सुचि सेवित अनंग, रसराम स उमंग सिय संग सुख पीन हैं॥३४

जानु सु जंघ जुगै उपमैं न लसै कदलि कलकाम सुतन है। गोल नितम्ब अतोल लखे, बिकती ललना गन मोल बिहून है॥ लालन लंक बिलोकि लुके गिरि, कन्दर केहरि चकना चून है। किंकिनि नाद करै रसरंग मनी कल हंसनि कि धुनि ऊँन है॥३५॥

॥ पीताम्बर ॥

झीन रंगीन नवीन नितै नित, छीन करै जन के अघ शूल है। पीत सुरंग अनंग रग्यो जनु, स्यामल अंगन के अनुकूल है॥ दामिनि चम्पक कंचन कि, रस रंगमनी उपमादि ये भूल है। श्री दशस्यन्दन नन्दन के चटकीलो लसै कटि दिव्य दुकूल है॥३६॥

॥ उदर ॥

सुन्दर उदर तामै नाभि सोभा सर, चलै त्रिवली

लहर रोम अवली सिवार हैं। आयत सु उर पाय प्रेम सुर पुर, अङ्क रूप सु मधुर सिय किये सु अगार हैं ।। चन्दन अरुन लेप करे सकरुन, धरे वरुन निकेत जात रतन के हार हैं। स्वच्छ रघु वच्छ जू के वक्ष पर मच्छ केतु करैं रसराम मनी लक्ष वलिहार हैं ।।३७।।

पीपर पान समान वरोदर, सुन्दर श्री रघुबीर को धीर है। त्यों त्रिवली रस रंगमनी, छवि कैसी तरंग सिंगार के नीर है ।। भानुजा और छटा हरती, दहिना वरती अति नाभि गंभीर है। रोम की राजि विराजी विलोकि, भयो मन राजी अदांजी अमीर है ।३८

।। छाति ।।

आयत उन्नत चिन्हित हैं, श्री प्रिया प्रिय चिन्ह ते मोद न माती। त्यों रसरंग मनी अनुलेपन लेपित, माल विअमोल विभाती ।। है छवि द्वार कपाटि कि मोहनि हाटी लगाये मनोज बिसाती। छाकी सुछन्द छमादि सुलक्षन छेम सो राघव छैल की छाती ।।३९।।

।। बाँह ।।

धर्म धुरास धरे धनु बान, सुदीनन दान दै दारिद दाहै। काल कराल की भीति हरैं, रसरंग मनी जन पैं करि छाहै ।। थाहै मनोरस वीर सु वृक्ष किधौं ये विजै

यमुना की प्रवाहैं । श्री रघुवंश बहादुर की, उमड़ी बल सोहै बड़ी बड़ी बांहैं ॥४०॥

॥ भुजा ॥

पीन प्रलम्बित जानु प्रजन्त, प्रपन्न प्रपालक धर्म धुजा है । त्यों गज सुण्ड अकार सिया गर हार हमेशन होति दुजा है ॥ भंजन भूमि रूजा दश शीश, मणी रसरंग सो सव्य जु जाहै । धीर बली धनु तीर धरे, रस बीर भरी रघुवीर भुजा है ॥४१॥

कीन्हे जुग खण्ड शंभु चाप ज्यों अरण्ड, रसराम मुद मण्ड सिय तन के श्री खण्ड हैं । धारक कोदंड सर परम प्रचंड भरे, वीरता घमंड परिपालक ब्रह्मण्ड है ॥ तेज मारतण्ड तम नासी दस मुण्ड, सन्त सरसिज खण्ड के विकासी बरिबंड है । बिजई अखण्ड अति ओज के उदंड काम गज वर सुण्ड सम राम भुज दण्ड है ॥४२

। उपरना ॥

कन्चन तार किनार रचे, छहरे दुहु ओरन छोर सुघट्टा । बाल रवी छबि देखि दवी दुति, दामिनि घेरे मनो घन घट्टा ॥ भृङ्ग भ्रमैं रसरंग मणी, सङ्ग लेत सुगन्ध झकोर झपट्टा । उन्नद अंसन यो विलसे, रघुवंश लला के सुरंग दुपट्टा ॥४३॥

॥ कर कंज ॥

सर धनु धरन दरन दुख दीनन के, भरन करन विश्व भर के उदर के। सुरसा सुवन से हैं दादुर दुवन के, विभूषन भुवन के वरद हरि हर के॥ भूषित सु रसराम अंगुलिन अभिराम,राम नाम अङ्कित सुमुद्रिका सुघर के। मणि से नखर के बरन दिनकर के, ज्यों कंज सोभा सर के हैं कर सियवर के॥४४॥

॥ कण्ठ ॥

उन्नत पै रसरंग मनी नत को नित भेंटत मेटत भीत को। रेख विशेष धरै छवि लीक सी, संगी सदा सिय बांहु विनीत को॥ कण्ठा विकुण्ठित कुन्जर जात, मणीन को मोहत है जग जीत को। कम्बु सो पै अति कोमल है, कल कण्ठ अनूठो सु कण्ठ के मीत को॥४५

॥ चिबुक ॥

गोल सु मण्डित गाढ़ सुढार, घनी चिकनीं सुकुमारन ठोड़ी। आमन के फल की उपमा, कहिये, किमि पार सके सम कोड़ी॥ पीत सु विन्दु आनन्द सनी, रसरंग मनी मलेत विलोड़ी। देखत दीठ ठगै न डगै, रघुनन्दन की सुठि सुन्दर ठोड़ी॥४६॥

॥ ओष्ठ ॥

लाल रसाल चुवें रस मानो, मयंक मयूष छटा मुसुक्यान की। बुद्धि विनाशन बिम्ब प्रवाल, कठोर कहा उपमा छवि खान की ॥ सौगुन स्वाद सुधा रस ते, रसरंग मनी यक जानहि जानकी। क्या बरनौ सुखमा सुख मैं, मनमोहन के मधुरे अधरान की ॥४७॥

॥ दन्त ॥

रैन दिना दिल में दरसें, दुति देखत दन्तन की दिलदार के। दाड़िम दामिनि कुन्द कली, उपमा लघु दूर धरौ बलिहार के ॥ पान कि खान मणी रसरंग सु सान भरी मुसक्यान निहार के। दें मनमोल अमोल सु मानिक, बोल सुनौ मृदु राघव यार के ॥४८॥

॥ नासिका ॥

उन्नत सुढार ताई ढेर सुकुमारताई छाई रस राम मनी मोद की हुलासिका। सुन्दर मनोज शैल शृंग की गुफा सी सोहैं संजुत सुगन्धि स्वास सिद्ध की सुबासिका ॥ डोलनि बुलाक की बिलोक तन डोलै डीठ मीठ स्वाद मूक नैंन क्यों करें प्रकासिका। तिल को प्रसून काम तून सुक तुण्ड झुण्ड वारि दीजै देखि रघुनायक की नासिका ॥४९॥

उन्नत औ सुकुमार सुढार निहारत ही मुद होत हुलासा मानो रच्यो रसरग मनी यह मयन विरंचि अनूप तमासा ।। तीनहुँ लोक की निरमलता सी लसी करै लोल बुलाक विलासा । नासा न कीर कि नीक लगै लखि सुन्दर जानकि नाथ की नासा ।।५०।।

। कपोल ।।

गोल कपोल अमोल झलाझल, बोलत में छवि लोल उछाहु की । कुण्डल औ अलकान की झांई, लखाई परे उपमा अस ताहु की ।। ज्यों जुग मरकत दर्पन में, प्रतिबिम्ब फलै युग लैं रवि राहु की । जीवन लाहु लहे रसरंग मनी, जे लखे छवि जानकि नाहुँ की ।।५१

चीकने चमकदार चारु चन्द्र विम्बहुँ ते अति सुकुमार मार कन्दुक से गोल हैं । राजैं रसराम मणी नीलक मणी के मानो मिथिला लली के मन्जु मुकुर अमोल हैं ।। कुण्डल सु छाँह छवि छावत सिगार, वारि कुण्ड जनु मैन मीन करत किलोल हैं ।. बोलत मैं लोल लसैं लेत मन मोर मोल कौसल किसोर जू के जुगल कपोल हैं ।।५२।।

।। नयन ।।

कन्ज ते मन्जुल लाल विशाल विलोकनि मान

मनोज विमोखी। स्याह सिगार भरी पुतरी पुनि, ता पर सिय स्नेह सों पोखी।। त्यों रसरङ्ग मणी सवनी बरूनी बरजोर चुभै चित चोखी। तोखिन आँखें हमारि लखें, अवधेश किशोर की आँखें अनोखी।।५३।।

बाँके बड़े उमड़े सुखमा, उपमा मृग खञ्जन मीन लहै ना। लाल सिता सित रङ्ग भरे, रसरङ्ग मणी मन मोहन पै ना।। सुन्दर शारद सारस के सम, शील रसील सुशील के ऐना। नैनन मेरे बसै नित जान जिवावन, जानकि नाथ के नैना।।५४।।

चन्चल चेटक दार बड़े, लगवार कलाकर काम करोरा। त्यों रसरंग मणी सिय आनन, चन्द के चातक चारू चकोरा।। कोर कसीले रसीले ललाम, करें बहु बाम वसी बर जोरा। मेरे चखान चुभै चितये चखये चित चन्दन के चित चोरा।।५५।।

राजिव से विकसे रतनार उदार अनन्द प्रदा अन होने। भौंह कमान समान कसी, सु विलोकनि बान बसी तिर छोने।। सोहै मनो रसरंग मणी, सिय शोभा सुधा रस पान के दोने। लोचन लाहुँ लहैं लखि के मम कौशल लाल के लोचन लोने।।५६।।

सोभा उमगीले बाँके मृग ते मदीले, मीन खंजन लजीले लखि कन्ज बिकसीले हैं। कज्जल लसीले कोर तारक सुनीले, कोस उज्जल कसीले धागे अरुन गसीले हैं ।। तियन कतीले मन हरन हँसीले, रसराम के सगोले कृपा सख्य वरसीले हैं। छैलता छकीले नव नेह के नसीले, सोहैं राम के सुसीले नैंन अजब रसीले हैं ।।५७

सीम सीलता के भरे सौम्यता क्षमा के कोटि कामद मता के देन वांछित फला के हैं। साके सुखमा के सुख छाके भूमिजा के, रसराम ओर ताके कृपा कोर अमला के हैं ।। अजब अदा के महा मंजुल मजा के, चित चोरक चला के बाँके काम के कला के हैं। मोहन मनाके कन्ज मीन मद नाके ऐन सोभा के त्यों सुधा के नैंन राघवलला के हैं ।।५८।।

उपमा विचारे सारे कवि हेरि हारे कन्ज खन्ज मृग मीन करि डारे बलिहारे हैं। सोभा के सँवारे गुन सील उजियारे, सुकुमारे मार मारे धन जीवन हमारे हैं ।। सेत अरुनारे कारे तारे तरुनारे प्यारे, कोर करुनारे न्यारे जोर छोर वारे हैं। बनत निहारे न उचारे रसराम यार, जैसे अनियारे राम लोचन तिहारे हैं ।।५९।।

॥ भौंह ॥

स्याह सचिक्कन कान लो लम्बित, काम कमान कसी अकिधौं हैं। बंक बिलोकि परै यदि पै तदि राजहुँ रंक को सौगुन सौंहैं॥ होहिं नही कबहूँ रसरंगमणी, अपराधिहुँ पै अन खौहैं। भावें भले भनिजावै नहीं, जेहि भाँति है भानु कुलाधिप भौहैं॥६०॥

॥ ललाट ॥

सीय सनेह को पट्ट किधौं रसरङ्ग मनी विधु आधौं विशाल हैं। प्यारो प्रसन्न प्रभा परिपूरित, पेखत ही करै हाल निहाल हैं॥ चन्दन की रचना सुचि मार रचो जनु चित्र को साल रसाल हैं। भूरि अभाग भगावन पावन, भूमिजा भावन को वर भाल है॥६१॥

॥ तिलक ॥

पीरी कल धौत हूँ ते कल कासमीरी केरो, निजकर रचे राम सरजू के घाट मैं। बीच मैं विराजैं श्री अरुन रंग रसराम, अभिराम उपमा करौं सुउदघाट मैं॥ जनु अनुराग संग चपला जुगल रेख, निवसी अचल सित नौमी निसि राट मैं। असुभ उचाट लखे सुखमाको ठाट लसै, तिलक ललाम लोकपतिके ललाटमैं ६२

।। मुख मण्डल ।।

कान के कुण्डल की लहरानी पै काम निसान कि सान उतारौं। त्यों रसरङ्ग मणी सिर की झमकान लखैं तन भान बिसारौं। मन्द अनन्द भरी मुसक्यान पै जान निछावरि को करि डारौ। औध अखण्डल के मुखमण्डल पै विधु मण्डल कोटिन वारौं ।।६३।।

।। केश ।।

कारी बड़ी चित चोर है प्यारी सु घूघँर वारी भरी अतँरान की। मानो चली अवली आलिनीन की, प्यासि मुखाम्बुज के रसपान की ।। शान शृङ्गार सनी रसरंग मनी, कुल कान हरैं बनितान की। जीवत जान में जाय बसै, जुल्फैं जबरी जुग जानकि जान की ।।६४

राघव नरेश जू के केस रसराम मनी, सेस हूँ न पावैं भनि सुखमा अपार पार। अति सै सुगन्ध भीने अमल कपोलन पै, लोल कुण्डलान मिले लहरात प्यार प्यार ।। समता न आवै जो बनावै करतार कहूँ, मति वितपन्न कोटि पन्नग कुमार मार। स्याह सुकुमार छल्लेदार देखि वारि दीजै, भ्रमर कतारन को बारन पै बार बार ।।६५।।

काली अलबेली पाली अमल चमेली तेल त्यौं तर सुगन्ध साली अतर उसीर सों। चीकनी अपारी सुकुमारी घुंघुरारी घनी, प्यारी सिय कर की सांवरी मति धीर सों।। मानो रसराम नैन आनन अजूब कंज, रज पुन्ज पान हेतु भ्राजैं भौंरी भीर सो, जोहै बरजोरी जादू जेर ज्यों जकरि जात, मन जानकीस जू की जुलुफ जंजीर सो ।।६६।।

।। क्रीट ।।

कन्चन को रचि कै मनि चित्र, विरंचि रच्यो पचि के पच खण्ड है। कोटि शशी सम शीत प्रभा जुत, कोटिन भानु प्रकाश प्रचण्ड है। मोहत है सबके मन को, रसरंग मनी तम मोह विहण्ड हैं। रूप उदण्डित श्री रघुराज के मण्डित मौलि किरीट अखण्ड हैं ।।६७

तेज को निधान निंदै कोटि सतभान सोहैं सीतल निदान कोटि ससि के समान है। कुन्डल त्यौ कान मानौ आपने निसान हारि मानि पंच बान जुग दै गयो सुजान है ।। धारे जासु ध्यान मोह तिमिर नसान तब, जस हुलसान 'रसराम' कियो गान है। सात खण्ड मान जटो दिव्य रतनान, राम मौलि सो मिलान मंडै मुकुट महान है ।।६८।।

॥ पाग ॥

पाग सीस बांकी सर पेंच ता पै बांकी लसैं अलकैं सुबांकी अलिपुंज उपमा की हैं। नासिका सु बांकी, मंद मुसक्यान बांकी अहा मीठी क्या ललाकी पाग सोहैं मजा की है ॥ भौहैं बेस वांकी प्यारी आँखैं बर बाँकी मन्जु मैंन रस छाकी सैंन मिलित सिया की है। बांकी सुअदा की बांके राम की सु झाँकी रसराम मनी झाँकी रही ताकी कहा बांकी है ॥६९॥

॥ सर्वाङ्ग ॥

कांति स्याम काय केरी काम की घटा सी घेरी फैरी कटि पट बिज्जु छुटा पीत पटकी। कन्ज से करान पै सु कन्चन कड़ान पै, कलित धनु सुबान पै सुरति जाय जट की ॥ मोहा मन आनन की सोभा रसराम मनी, लोभा लखि ललकि कपोल लट लटकी। चटकी सु चन्द ते सुजान रघुनन्दन की, मन्द मुसक्यानि मेरे प्रान आनि अटकी ॥७०॥

स्यामल कलेवर मैं जेवर जड़ाऊ सोहैं कटि पट किंकिनि सु रट त्यों पुरट की। नाभि की निकाई उर लम्ब बाहु कम्बु कण्ठ, कहै कौन सोभा गति भारती की भटकी ॥ सीस पै मुकुट छटा छावैं रसराम मनी,

मैन बान अनी नैन भौंह चाप लट की, जोहत सुजान जानकीस जू की मुसुक्यानि, तजि के जहान मेरी जान जाय अटकी ॥७१॥

॥ युगल झाँकी ॥

सुखमा नखान की निरखि नूपुरान की बसन परिधान की त्यों किंकिनी रटान की । नाभि उदरान की उरन आभरान की, सु भुज भूषनान की सकंज धनु बान की ॥ ग्रीव चिबुकान की मुखन मुसक्यानि की, लखनि लोचनान की सुरस राम प्रान की । जानकी के जुत झाँकी जानकी के जानकी सुजोग बलि जानकी सजीवन है जानकी ॥७२॥

इत चन्द्रिका का ढार सु बेनी उतै, अलकै कल कुण्डल क्रीट लसैं । इत गौर छटा तन की, उत स्यामल दोउ दुहूँ गल बाँह कसैं ॥ इत सांवरी सारी उतै पटपीत, विलोकि परस्पर मन्द हसैं । अस नेह भरे सिय राम सदा, रसरंग मनी हिय में निवसैं ॥७३॥

॥ श्री नाम परत्व ॥

सीताराम तत्व अति अगम परत्व, लिंग भेद औ अभेद रूप गावैं वेद साम है । सीताराम प्रीति परमीति की पुनीत गीत, गावत मिटत भव भीति भ्रम

काम है ।। सीताराम नाम आठौ जाम जपैं बामदेव, कासी वासी जीव तासो तारत तमाम है । सीताराम स्वामी स्वाती श्याम घन रसराम, चातक के चित टेक एक सीताराम हैं ।।७४।।

।। दोहा ।।

नख सिख सीताराम की, सुखमा अकथ अपार ।
कह्यों उड़ात अकास जिमि, मसक स्वबल अनुसार ।।

जय जय श्री गुरुदेव श्री कामदेन्द्र मणि मोर ।
बनी बेग बिगरी सु जिन, कृपा नैन की कोर ।।

अनन्त श्री स्वामी रामानन्दानुग श्री अयोध्यावासी
श्रीरसरंगमनि रचित श्रीसीताराम शोभावली
सवैया समाप्ता:

।। शुभं भूयात् ।।



॥ श्रीगुरवे नमः ॥

॥ श्रीसीतारामाभ्यां नमः ॥

श्रीजानकी अष्टकारंभ

ईश ईश नायक पूजित पद पङ्कज प्रनप परेरी। सकल शिरोमणि शक्ति शान मद मान मलन छबि तेरी। शील सुभाव सरस शोभित शत सुधा स्वाद मुख फेरी। युगलानन्य शरन वल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ॥१॥

श्री मिथिलेश विशेष विभव बर देश सनेह सु तेरी। कौतूहल कल केलि कला कर दम्पति मोद दयेरी ॥ परिकर निकर संग नाना रंग बाल उमंग कियेरी। युगलानन्य शरण वल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ॥२॥

सुखमा रूप निहारि नयन भरि सासु सात शत घेरी। उरझी ललित लाड़ लालित सजि बारि प्राण धन ढेरी ॥ सुन्दर सुवन सनेह सनी सिय जू पर प्रीति घनेरी। युगलानन्य शरण बल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ॥३॥

कनक लता केतकी कञ्ज कलि काहारी हिया हेरी । काम कामिनी कला मदक दामिनि भामिनि चय चेरी ।। रस रूपा प्रेमा प्रधान प्रिय प्रीतम प्रीति नयेरी । युगलानन्य शरण बल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ।।४

चितवन चारु चतुर चूड़ामणि चित वित हरत न देरी । प्रीतम प्राण शुभग संपुट बिच रतन बिचित्र बसेरी ।। पलक प्रेम पूरन प्रकाश कर कामद कोशलमेरी । युगलानन्य शरण बल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ।।५ ।

धवल धार सरजू सजनी सम सुजस सहस श्रुति टेरी । नवल नाम अभिराम अमल अद्भुत अनूप गुन वेरी ।। सम्वल सरस पुष्ट पावन पर धाम छींट छबि तेरी । युगलानन्य शरण बल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ।।६।।

करुणा कृपा कटाक्ष भई तब कहा करे छलछेरी । अनायास परत्यक्ष परावर नृपति प्रकाश सनेरी ।। हृदै ग्रन्थ भेदत छेदत छल छन्द बासना जेरी । युगलानन्य शरण बल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ।।७ ।

अनुदिन उर अनुराग अलौकिक प्रिया चरण निवहेरी । योग यज्ञ ब्रत नेम ज्ञान गुन नेह नदी सबहेरी ।।

मुक्ति मुक्ति अभिलाष लाष करि रसिकन सुमति गहेरी । युगलानन्य शरण वल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ॥८॥

अष्टक अमल सीय स्वामिनी नित चित दै जौन पढ़ेरी । पावे अवशि सनेह प्रिया पद प्रीत प्रतीत बढ़ेरी। दुर्मति दाह दरिद्र दोष दिल दलत दाग भट भेरी । युगलानन्य शरण वल्लभ निधि सीय स्वामिनी मेरी ॥९

॥ इति श्रीजानकी अष्टक सम्पूर्णं ॥

✻ अथ श्रीजानकी शतक ✻

रामा रति वर्द्धनी रसेशा राघव प्राण पियारी ।
राम रंग दरशनी रमन मन रंजनि जनक दुलारी ।
राग रूप रस जस सुख सदना शशि बदना सुकुमारी ।
युगलानन्य शरण रमनी रतिमान बिमोहन वारी ॥१

कोक केलि पंडिता मंडिता कलावती कमनीया ।
कमल प्रिया कोमला फोक नद सदृश सुदृग बरनीया ॥
कामा कांतमती कमला कर पूजित पद रमनीया ।
युगलानन्य शरण संसृति दव दारुण दुख दमदीया ॥२

भव्य भावदी भूरि भलाई बधू रसिक रघुराई ।
भाल विभूषण विशद भूषिता निदूंषिता सदाई ॥ भोग

भूति भूतल भव भामिनि पद वंदिता सोहाई । युगला-नन्य शरण भजनीया भजन भावना दाई ।।३।।

चामीकर तन तेज निंदिता चारु चातुरी रचना । चमत्कारिणी चित्त हारिणी चांद चमक चय बचना ।। चंदन चाँद चाँदनी चपला चाह चित्त विच सचना । युगलानन्य शरण चश्मोंदी ज्योति जगमगति अचना ।।४

सिया सलोनी सहज सोहावनि सारंग नयनी बामा । शरन पालनी शुभ गुनखानी कमला केलि ललामा ।। समीचीन सज्जन मन रंजनि सरल सुभाव सुधामा । युगलानन्य स्वामिनी सब की श्री सीता नव वामा ।।५।।

मिथिला मोदकरी मिथिलापति नन्दनि नवला नारी । गिरिजा पूजन ततपर पति पद प्रेम पराछवि धारी ।। रघुनन्दन कल क्रीड़ा बिलासिनी सुख रासिनि उजियारी । युगलानन्य सुनैना रानी सुता सनेह संवारी।।६

श्रीदश स्यंदन भूप पतोहू परम माधुरी सरिता । सोमवंश जीवनी जानकी जग बंदिता सुचरिता ।। कौतुक सदन शोभिता तरुनी नित्या गुन गन भरिता । युगलानन्य शरण संपति सद दानी फलन सुफरिता ।।७

दृगजा कूल कलोलनि रसिका कनक भवन भल भ्राजी। नव नागरि गुन आगरि प्रीतम प्राण प्रिया सुख साजी ।। श्रुति कीरति उरमिला मांडवी मधुर हाँस लखि राजी। युगलानन्य शरन सुन्दर लावण्यलता रस राजी ।।८।।

मंदस्मिता मनोज माननी मान प्रहार प्रवीना। प्रेम मधुर आसन आसीना छबि निधि पय प्रिय मीना। माननीय मानस मराल का कलित कंज करबीना। युगलानन्य शरन सुकामदा कादंबिनी नबीना ।।६।

श्रीप्रमोदबन कुञ्ज बिहारिनी रसिक बिहारी संगिनि। झूलन गीत परापनि निज मुद सखिन प्रदायनि रंगिनि ।। लज्जावती रसीलो ललना अद्भुत नेह तरंगिनि। युगलानन्य शरण सीमा सौभाग्य सदैव उमंगिनि ।।१०।।

श्रीसीता शत नाम सुधाहृद माझ सुमज्जत जोई। ताको पाप ताप तम कोटिन कलप विनासन होई ।। और कौन फल अधिक कहौं सुनि सुख रससो सब कोई। युगलानन्य रसिक रघुबर बस होत बात नहिं गोई ।।११

।। इति श्रीजानकी शतक सम्पूर्ण ।।

।। मधुर युगल नाम ।।

श्री चारुशिला पद वन्दि, बहुरि श्री रामचरण सिरनाऊँ । मधुर नाम सिय राम मधुर रस, प्रेम प्रदोप्ता गाऊँ. जानकीकान्त जानकी जीवन जानकी प्रान पियारे । जानकी नायक जानकी भायक, जानकी वर सुकुमारे ।। जानकी राजन जानकी साजन, जानकी नाथ परम्पर । जानकी लालम जानकी बालम, जानकी पीव प्रयम्बर ।। जानकी भूपम् जानकी रूपम्, जानकी मोद प्रकाशी । जानकी प्रियतम जानकी लाड़िले, जानकी संग विलासी ।। जानकी बल्लभ जानकी सुलभ, जानकी नयन विहारी । जानकी जोहन जानकी मोहन, जानकी हिय बन चारी ।। जानकी संगी जानकी रंगी, जानकी रूप बिहारी । जानकी मानी जानकी जानी, जानकी वेष श्रृंगारी ।। जानकी दूलह जानकी रासिक, जानकी रंग रँगीले । जानकी नाह जानकी नेही, जानकी सुख सरसीले ।। जानकी गेही जानकी देही, जानकी युत वन गमिता । जानकी योगी जानकी भोगी, जानकी तल्प सुमिरता ।। जानकी भागी जानकी रागी, जानकी वेष विचित्रा । गानकी प्रयरस जानकी गुन वस, जानकी पीव पवित्रा ।। जानकी ज्ञानम् जानकी

ध्यानम्, जानकी रुचि अभिलाषी। जानकी जयकर जानकी नयगर, जानकी सँग प्रिय भाषी ।। जानकी भूषन जानकी पूषन, जानकी नूतन नागरी । जानकी सुखकर जानकी हियहर, जानकी सुयश उजागरी ।। जानकी स्वामी जानकी नामी, जानकी गर भुजधारी । जानकी लायक जानकी लोभी, जानकी चित्त विहारी ।। जानकी बित्तं जानकी मित्तं, जानकी रहस उपासी । जानकी छविकर जानकी कर धर, जानकी महल विलासी ।। जानकी मानद जानकी जानद, जानकी रति रस रासी । जानकी रसिया जानकी जसिया, जानकी प्यार प्रकाशी ।। जानकी युक्ता जानकी भुक्ता, जानकी हिय हुलसावन । जानकी खोजी जानकी मोजी, जानकी रस बरसावन ।। जानकी रस बस जानकी यश बस, जानकी युत गिरिचारी । जानकी नीतिं जानकी गीतं, जानकी चंग बिहारी ।। जानकी सोहन जानकी मोहन, जानकी फाग खेलावन । जानकी रम्यं जानकी गम्यम्, जानकी डोल झुलावन ।। जानकी भद्रं जानकी चन्द्रं, जानकी युत नृत कारी । जानकी क्षेयं जानकी ध्येयं, जानकी जंग विहारी ।। जानकी सुन्दर जानकी मन्दिर, जानकी इष्ट अनूपम् । जानकी निष्टं जानकी दृष्टिं, जानकी मिष्ट ब्रवीतम् ।। जानकी

इष्टं जानकी सिष्टं, जानकी बस रस दानी । जानकी
पुष्टं सुहृद समुष्टं, जानकी हर सुख खानी ।।
तुम सर्वस जानकी जू के, जानकी सरबस तोरे ।
अमित गुणन सौंदर्य्य भरे प्रिय, तुम दोउ सरबस मोरे ।।
हे स्वामी श्रीलाल उदारं, बिनती सुनिये मोरी ।
नामोष्टोतरि पाठ करै सोई, लहै अलीगति तोरी ।।
चित्त विमोहन नाम मधुर बर मंजु छन्द मन भाये ।
श्री प्रेम अली नित वसि प्रमोद बन. गान करे रस छाये ।।

मधुर संकीर्तन

जै सीते जै सीते सीते जै सीते जै जनक सुते ।
जय राघव जै राघव राघव जैं राघव जै प्राण पते ।।
जय जग बन्दनि भव भय भंजनि जनकनन्दिनी श्रीसीते ।
जय श्रीरामं रूप ललामम् छवि गुण धामं प्राण पते ।। जै०
जै जग कारणि भव भय टारनि कृपा स्वरूपिणि श्रीसीते ।
जै रस रूपा कृपा स्वरूपा रघुकुल भूपा प्रान पते ।।जै सी०
जै सुखसागर गुणगण आगर सुयश उजागर प्राणपते ।जै०
जै रस दायनि प्रेम प्रदायिनि रसिकन जीवन श्रीसीते ।जै०
प्राणेश्वरपति रसिक रसेश्वर जै सर्वेश्वर प्राणपते ।।
जै सीते० ।। जै सुकुमारी रूप उजारी मृदुचित वादी
श्री सीते । जै सुकुमारे जीवन प्यारे करुणागारे प्राणपते
।। जैं सीते०।। जै छबि रूपा परम अनूपा मृदुल स्वरूपा

श्रीसीते । जै मनमोहन मृदु हँसि जोहन रसिकन जीवन प्राण पते ।। जै सीते० । जै बन चारनि पिय मन हारनि सुख बरसावन श्रीसीते । जयति छबीले रसिक रंगीले गुन गर्बीले प्राणपते ।। जै सीते०।। जै मातेश्वरि जै जगदीश्वरि चरण शरण हौं श्रीसीते । प्राण अधारे नयनन तारे जीवन प्यारे प्राणपते ।।जै सीते०।। दोउकर जोरी करति निहोरी गुन शीला तब श्रीसीते । शरणहिं आई लखि ललचाई हँसि हिय लाई प्राणपते ।। जै सीते०।।

दो०–जीवन मूरी रसभरी, कर गहि लेहु सम्हार ।
जै रघुनन्दन प्राणधन, जीवन प्राण अधार ।।
सो०–पुनि पुनि दोउ करजोर गुनशीला विनती करइ ।
करिय कृपा की कोर चरण शरण हूँ युगल वर ।।

–: श्रीसीता रामनाम रटन :–

सीताराम सीताराम रटते रटते यह तन छूटे प्यारे । भल औसर मिलि गया दया से नर समाज सुख सारे ।। श्री मिथिलेश लली संग शोभित दशरथ राज दुलारे । राम श्याम घन घटा छटा लखि मन में मोद अपारे । माथे मुकुट कान में कुण्डल फूल माल गले डारे ।। सीताराम सीताराम रटते रटते दर्शन करो मेरे प्यारे ।। अतर को डारी जुलुफ सँवारी सोहत कारे कारे। कल कपोल पर कुण्डल हलकै तिलक रेख उजियारे ।।

विहँसे हँसे हलै नासा मणि सघन दंत दुति कारे । पान खाय मुसकाय मौज में प्रेमिन के हित कारे ।। कंठ गोप कंठा हारावली जगमग जोति अपारे ।। सीताराम सीताराम रटते रटते यह छवि देखो प्यारे ।। बाहुँ विशाल विभूषण साजै मुन्द्रिकादि रत नारे । पहुँची कड़ा विजायठ सोहैं धनुष वान कर धारे ।। पीताम्बर उपवीत मनोहर कटि किंकिनि झनकारे । मणि नूपुर की मधुर मधुर धुनि मुनि मन के आधारे ।। श्याम वरन पद पृष्ट अरुण तल रेख कुलिश ध्वज धारे । नवल रँगीले सोभित दोऊ जीवन प्राण हमारे ।। स्वामिनि शिर चन्द्रिका चमकि रही बेंदी भाल सँवारे । सारी जरित किनारी झलकै पिय गल बाहीं डारे ।। मधुर मधुर सोहै मन मोहै हरसै हिया हमारे । अयोध्यादास युगल छवि निरखै नेह नया उर धारे ।।

-: प्रिया जू नाम रटन :-

जय श्रीसीता सीता सीता जय जय सीता सीता । सीता कहे सुख होगा प्यारे राम कहे दुख वीता ।। जो जन सीता नाम उचारै सोई हमारे मीता । हे मन सीता नाम उचारो याहि भागवत गीता ।। सीता कहै से राम सुख पावैं राम कहे से सीता । जो जन सीताराम उचारे सोई जगत में जीता ।। जग के नाता काम न आता

स्वारथ ही के मीता। राम कहे नाता सबहिं सुहाता बिन स्वारथ के हीता ।। कनक भवन मनि जड़ित सिंहासन बैठे राम अरु सीता । सजे सिंगार उदार सिया वर निरखो हो मन मीता ।। सीता राम की शोभा निरखैं राम निरखि रहे सीता । राम श्याम घन श्याम वरन है गोर वरन श्रीसीता ।। हौं अनाथ कोई नाथ न हमरे हाथ पकरि लो सीता । हाथ पकरि रघुनाथ मिलावो तपनि बुझावो सीता ।। हे सीते मोहि राम मिलावो जनम जात है बीता । यह सुनि भे प्रसन्न सिया वर मिले जानि भयभीता ।। ज्ञानकला आनन्द उमगि उर गावै जय श्रीसीता ।।

—: श्रीराम रसरंग मणि कृत :—

जय जय जय श्रीराम प्रिया श्री सीता प्रिय जय। जय श्री सीताकान्त राम कान्ता करुणामय ।। जय श्री सीताप्राण नाथ श्रीराम पियारी । जय रघुराज जीवनी जानकी जीवन भारी ।। जय जानकी निवास जयति रघुराज निवासा । जय सीतामुख चन्द जयति रघुवर सुखरासा ।। जय जय जय श्री रामबल्लभा जय सिय बल्लभ । जयति राम रसिका अयोनिजा नायक बल्लभ ।। जयति राम रमनी विदेहजा रमण रसीले । जय रघुबर भामिनी भूमिजा रसिक सुशीले ।। जय जय श्रीरघुवीर

मोहनी महिजा मोहन । जय रघुबर प्रियतमा जयति जय सिया प्रीतम सोहन ।। जय जय सीताराम जानकी राघव जय जय । जय मैथिलि रघुनाथ श्याम श्यामा सोभामय ।। जय श्री रघुकुल केतु जयति निमिबंश पताका । दशरथ जलनिधि चन्द्र जनक वारिधि विधु राका ।।

।। इति ।।

ॐ युगलधाम की महिमा ॐ

मेरो मिथिला पुर बैंकुन्ठ तिलक त्रिभुवन उजियारो है ।।टेक०।। त्रिभुवन उजियारो है प्राणधन जगते न्यारो है । जन्मभूमि ममपुरी सुहावनि, सुमिरत उर अनुराग वढ़ावनि, त्रिविध ताप भव दाप नसावनि, रस की खानि रसिक जन जीवन गाय गाय यश थक्यो शेष विधि लिह्यो न पारो है ।।मेरो०।। रस की मूरि धूरि या पुरकी, मेटति अखिल ताप जन उरकी, सेव्या सकल मुनिन की सुर की, आदि श्रोत अनुराग सुधुर की, त्रण पादप अरु विहंग वसत बनि सुर परिबारो है ।।मेरो०।। कीन्हीं बिमल अमल जहँ लीला, मंगलमई मोद रस सीला, ठौर ठौर अति रम्य रसीला, बहत त्रिबिध बर वायु रंगीला, मरकत भवन सुवर्ण बिपिन

जगमोहनि हारो है ।।मेरो०।। प्रेम तरंगिनि कमला बिमला, उठत हिलोरें उज्जवल अमला, महल महल में छुटत शशीकला, भने रुचिरता अहहको भला, निरखि रुचिरता चकित भयो जहँ सिरजन हारो है ।।मेरो०।। ज्ञान शिरोमणि पिताजी मेरे, सिखत ज्ञान मुनि जनतिन नेरे, मिलत न तुल्य जगत में हेरें । अलख अनादि ब्रह्महूँ जाके पहुँचो द्वारो है ।।मेरो०।। प्रेम मूर्ति सब वन्धु हमारे, रूपशील गुण के उजियारे, त्रण त्रण मोहि यहां के प्यारे । पशु पक्षी हूँ जगते न्यारे । कण कण में यह दिव्यपुरी से प्रेम हमारो है ।।मेरो०।। रसिकराय को नाथ बनायो, दिव्य प्रेम को पाठ पढ़ायो, बार बार बहु भाँति छकायों, रसिया जहँ नाचो अरु गायो, दास किशोर त्रिशूल पाणि शिव पुर रखवारो है ।।मेरो०।।

मेरो अवध धाम ब्रह्मांड मुकुट मणि मंगलकारी है ।।टेक०।। मंगलकारी है प्रिया जू मंगलकारी है । ललित ललित जहँ नित नइ लीला, मुनि जन मनन बिमोहन शीला, गावत सुकपिक गान रंगीला, कन्चन भवन प्रमोद बिपिन की शोभा न्यारी है ।।मेरो०।। कुन्ज कुन्ज आनन्द अपारा, निर्मल जल सरयू की धारा, घर घर भक्ति भरे भंडारा, कोउ न पूँछत मुक्ति का द्वारा, द्वारपाल हनुमन्त लाल सन्तन हितकारी हैं ।।मेरो०।।

केलि कलित लखि आनन्द मूला, बरषें सुरगन सुरतरु फूला, जनकलली जहँ झूलें झूला, कोटि जनम तप किये होय दर्शन अधिकारी है ।। मेरो० ।। नित गलियन में धूम मचाऊँ, होली माहीं रँग रस छाऊँ, श्रावण में झूलन सुख पाऊँ, सरद समय रसरास रचाऊँ, सखन संग मृगया बन खेलूँ बनूं शिकारी है ।।मेरो०।। परम सनेही मम पितु माता, लक्ष्मण भरत शत्रुहन भ्राता, केवट सरिस मीत सुखदाता, मिथिला वासिन से दृढ़ नाता । कोउ न जानत सखियन संग जो प्रीति हमारी है ।।मेरो०

श्री प्रेम विलास

श्री रसिक वल्लभ शरणजी कृत

।। श्री जानकी वल्लभो विजयतेति रामः ।।

चरण कमल पिय चतुर लखि, एक टक रहे लुभाय ।
लियो महावर हाथ में, रंग भरयो नहि जाय ।।१।।
कर पर अंचल राखि पिय, तिन पर चरण अनूप ।
चितवत लीन्हें मुकुर ज्यों, अमित माधुरी रूप ।।२।।
चूम्वत छ्वावत नैन पिय, जावक चित्र बनाय ।
देखि अटपटी प्रेम की, गति समुझी नहि जाय ।।३।।
अदभुत पद पल्लव प्रभा, मृदु सुरंग छवि रैन ।
छिन छिन चूम्वत प्यार सो, रहत लाय डर नैन ।।४।।

अदभुत छवि की माधुरी, चितै विवश ह्वै जाहि ।
यहै सोच पिय प्रेम को, रहत प्रिया मन माहि ।।५।।
कुअँरि छवीली अमित छवि, छिनछिन औरहि ओर ।
रहि गये चितवत चित्र से, परम रसिक शिर मौर ।।६।।
दृग पोंछत अंतर अधिक, सहि नहिं जाति निमेषि ।
पल पल जल भर आवहीं, रूप माधुरी देखि ।।७।।
बड़ो मन्द अरविंद सत, जेहि न प्रेम पहिचानि ।
प्रिय मुख देखन दृगन को, पलक रचीविच आनि । ८।।
अखियन आलस छवि लखैं, अमल उज्यारी माहि ।
बहुरि चंद की डीठि डरि, करत मुकुट की छाहि । ९।।
पलक पान की पीक सों, रँगी रँगीली बाल ।
रीझि रहे सोइ निरखि निशि, नींद भरे दृग लाल ।।१०।।
रैन घटे त्यों त्यों बढ़ै, आलस रूप झकोर ।
नीद भरे पिय उर अरे, नैनन पैनी कोर ।।११।।
जब पल आवें झुकत पिय, दरपन देत देखाय ।
तब अपनी अंखियान पर, अँखियाँ रहत लोभाय ।।१२।।
नींद झुकी पल निरखि पिय, बीरी देत पवाय ।
उत नैनन के खुलत ही, इत बीरी छुट जाय ।।१३।।
भौंर निवारत बदन लखि, मन धन वारत जात ।
फूंकि जगावत लाल तब, खुले नयन मुसुक्यात ।।१४।।

श्रम जल पीक सुरंग कन, झलकत अमल कपोल ।
सुरति सिंधु के मथन में, प्रगटे रतन अमोल ॥१५॥
कहुं अंजन कहुं पीक लगि, अंग रंग उदगार ।
चूमत झूमत रमक से, दृग अति नींद खुमार ॥१६॥
प्रात उठे परयंक पर, सौरभ रस लखि अंक ।
चाह विवश दोउ लाड़िले, लपटत पुनि निरशंक ॥१७॥
अदल बदल पर भूषननि, अदल बदल रँग अंग ।
अदल बदल तन मननि में, बढ़त तरंग अनंग ॥१८।
जागे पुनि श्रम सैन के, लपटनि पुनि ललचात ।
भोर समय सूचननिरखि, सुनि वीणा सकुचात ॥१९॥
सकुच जानि तिय की तहाँ, लगे सवांरन लाल ।
वसन भरगजे भूषननि, विच विच ख्याल रसाल ॥२०॥
लगी सवाँरन लाड़िली, कछु गति उलटी वानि ।
दई आरसी हाथ तब, हसे लाल गहि पानि ॥२१॥
बिन दुकूल बैठे दोउ, पिय प्यारी भरि अंक ।
गौर श्याम भरि पुँजते, झलमलात परयंक ॥२२॥
नेह परावधि लाल है, प्रीति परावधि लाल ।
मिले अनमिले मानहीं, एक टक लखत निहाल ॥२३॥
प्यारी मन लिये रहत पिय, पिय मन प्यारी लीन ।
जल तरंग ज्यों मिलि रहे, क्यों कहिये जल मीन ॥२४॥

पूरित नित अभिलाष हम, जो कछु इच्छा होय ।
पै निज मुख सो कछु कहौं, ज्यों तन मन सुख भोय ॥२५॥
सुमन सुखासन सेज पर, लटकी कुंअरि सुभाय ।
पिय नैननि को करनि सों, तहाँ पलोटत पाय ॥२६॥
अति सुकुमारी लाड़िली, पिय किशोर सुकुमार ।
एक रस प्रेम छके रहैं, अदभुत प्रेम विहार ॥२७॥
अति स्वादी दोउ लाड़िले, केलि पुंज सुख राशि ।
रीझि रीझि बिच बिच करत, मधुर मंद मृदु हाँसि ॥२८
ज्यों ज्यों नैन तरँग उठे, त्यों त्यों मुख छवि कांति ।
कहां कहौं रुचि चाह की, छिन छिन नव नव भांति ॥२९॥
अलसोहें निशि के जगे, रस बरसोहें मैन ।
एक टक सोहैं अध खुले, सहज हँसो हैं नैन ॥३०॥
आनन सों आनन धिये, पानन रचे कपोल ।
लखि रीझे छवि आरसी, विहंसे लोचन लोल ॥३१॥
पिय पोंछत पट पीत सों, प्रिया कपोलनि पीक ।
नागरी पोंछति लाल के, अधरनि अंजन लीक ॥३२॥
अखियाँ रस भायन भरी, आलस रूप निहार ।
आधे आधे वैन सुनि, नहिं पीढ़त रिझवार ॥३२॥
रीझि श्याम भुज भरि लई, घुरि ढुरि विहरत मित्त ।
अधर अधर उर उरज अरि, चोंपनि धरि धरि चित्त ॥३४

कैसी छबि फबि लखि रही, गसनि लसनि अँग अंग ।
नेह सिंधु युग सीम तजि, मिलि भये लीन तरंग ॥३५॥
दम्पति के अनुराग को, केहि विधि करौं बखान ।
प्यारी पिय को प्राण है, पिय प्यारी को प्राण ॥३६॥
नख सिख लौं अति मोहनी, नाहि न कछु समतूल ।
रूप लता लागे मनो, मुसकनि चितवनि फूल ॥३७॥
उभै सरोवर रूप के, हंस सखिन के नैन ।
अद्भुत मुकता चुगत है, मुसकनि चितवनि सैन ॥३८
लाल लाड़िली रंग भरे, भीनी रंग सहेलि ।
रंग भीनि नव कुंज में, करत रंग भरि केलि ॥३९॥
गान कियो चहै लाड़िली, पान खात मुसुक्यात ।
लेन तमूरा मन लियो, कहा गान की बात ॥४०॥
नवल किशोरी चतुरि ज्यौं, तैसे नवल किशोर ।
गान तान रस रहस की, बिहँस बढ़ी दुहुँ ओर ॥४१॥
कबहुँ चेति बलिहार करि, कबहूँ होत विचेत ।
प्यारी तान तरंग में, पिय मन बुरकी लेत ॥४२॥
भोर सेज से उठत ही, प्रेम सने सुकुमार ।
पानि पानि जोरे दोऊ, विहरत विपिन विहार ॥४३॥
जहँ जहँ भामिनि पग धरति, परति ललाई लीह ।
मनु धरती धरती फिरे, तहँ तहँ अपनी जीह ॥४४॥

ठुमुकि धरति पग नदति ह्वै, नूपुर किंकिन राव।
लाल श्रवण ता ओर लखि, होत और मन भाव ॥४५॥
माल अलक पट मरमजे, अधरनि मुखहूँ पीक।
आवत गज गति कुँजते, भइ उपमा सब फीक ॥४६॥
कैसी आवनि कुँजते, पै पीरी छवि छाय।
तिय जंभाति हँसि पियतब, वीरी देत पवाय ॥४७॥
सलज झुकौहैं दृगन की, मुसुकनि लाल विकात।
भूले तन मन सुधि तेऊ, निरखत नहीं अघात ॥४८॥
नैन परस पर बसत दोऊ, सो छबि मुकुर लखाय।
बढ़ी प्यास रस विवस हित, लपटे अति अकुलाय ॥४९॥
करत विहार आहार पिय, नेक न तऊ अघात।
सेवत आश खवास ज्यौं, ढोरत विजन सिहात ॥५०॥
गलवहियाँ दीने खड़े, भरे रंग रस रात।
मुदरी मुकुर निहार दोऊ, समुझि सकुचि मुसुक्यात ॥५१॥
जुरें जुरें फिरि हँसि मुरैं, घुरैं ढुरै रहि जांहि।
लोचन लहरैं निरखि पिय, धीरज ठहरैं नांहि ॥५२॥
अलसाने झूमे झुकत, सरसाने छवि ऐन।
विहँस ढुरनि प्रिय पियापै, नींद घुराने नैन ॥५३॥
तन मन के बिछुड़े नहीं, चाह बढ़ै दिन रैन।
कवहुँ संयोग न मानहीं, देखत भरि भरि नैन ॥५४॥

अंग अंग सब मिली रहे, मन सो मन उरझाय।
अति विचित्र यह नेह गति, चित्त न कबहुं अघाय ।।५५।।

अनुपम श्यामल गौर छवि, सदा वसहु मम चित्त।
जैसे घन अरु दामिनी, एक संग रह नित्त ।।५६।।

पलकनि के जैसे अधिक, पुतरनि सो अति प्यार।
ऐसे लाड़ली लाल के, निशि दिन चरण सम्हार ।।५७।।

सुनि ध्रुव जब लगि प्राण है, आनहु जनि कछु चित्त।
परम रसिक वर कुँवर दोउ, हिया लड़ावहु नित्त ।।५८।।

जेहि बिधि बारि अगाध मधि, रहत मुदित अति मीन।
युगल रूप रस केलि में, रहो सदा मन लीन ।।५९।।

निज अघ अवगुण समुझि प्रभु, कछु कहि आवत नाहिं।
करूणा निधि निज गुननि गुनि, विहरहु मम हिय मांहि ।।६०

।। इति प्रेम विलास ।।

❀ श्री सीतारामचन्द्राभ्यां नमः ❀

अथ-प्रेमाष्टक

दोउ दुहूं की मनोहर माधुरी, देखि रहै जु निमेष विसारी।
दोउ दुहूं मुसुक्यान मई, बतियान में प्राण करै बलिहारी ।।
दोउ दुहूं के रंगे रँग में, अंग में रँग वाहि रचै रुचिधारी।
फीको लगै पियपीत पटूको, भटूको लगै प्रिय साँवरी सारी।।१

दोउ दुहूं के स्वरूप छके, ललके न परै पलकें अंखियान है।
दोउ दुहूंनके हास विलास,हुलास में जानत द्यौस निशानहै।।
दोउ दुहूं के सनेह सुभाय, समाय रहै उपमान न आन है।
दोउ दुहूंनके पाणके प्राण, सु जानिये जानके जान निदानहै।२

ह्वै बलिहार निहार दोऊदुहुँ,बारि उतारिपियेअति प्यारसों
दोउ दुहूं के दूकूल हिये, छुपकाय छकै,अति आनन्द सार सों
दोउ दूहूंन के नाम सुने सुनैं, सौगुने स्वाद सुधा रस धारसों।
दोउ दूहूंन के गोद भरैं,थहरै अंग मोद विनोद अपार सों ।।३

दोउ दूहूं अपने कर कंज, सुव्यंजन मंजु मजे से पवावैं।
दोउ दूहूं मुसुक्यान महारस,खानि विलोकनि पैं वलि जावैं।।
दोउ दूहूं मुखदै वीरी लखि, माधुरी भाय भरी छकि जावैं।
दोउ दूहूं के रंग छके, नवरंग उमंगनि सो न अघावें ।।४।।

संगही दोउ रहै रसिया, लसिकै रस रास विलास छकावें।
दोउ दूहूंके अंगनि को, अपने कर सेइ सुभाग सिहावें ।।
दोउ दूहूं मनमें दिन राति, अनेकन भांति आनन्द बढ़ावें।
अंगनि अंग मिलाय रहै, पैतऊ मिलवे को दोऊ ललचावें ।।

दोउ दूहूं दुलराय सुभाय, अघाँय नहीं तरसाइ रहे हैं।
दोउ दूहूं के उछाह लिये, अति चाह उमाह बढ़ाइ रहे हैं ।।
दोउ दूहूं गुण गाय सुरूप, सुभाय अपान भुलाय रहे हैं।
दोउ दूहूं उरलाय महासुख, सिंधु समाय थिराय रहे हैं ।।६

दोउ दोहूं के शृंगार सजे, रिझवार नेवारि नई सखियान के ।
दोउ दुहूं प्रिय ऐसे लगे, अजु ऐसी न दीप शिखा पखियान को
दोउ दुहूं के सजीवन प्राण, सुधा न सुजीवन यो झकियान को
दोउ दुहूं दरसे परसै, पै तऊ तरसै सरसै अंखियान को ।।७।।
दोउ दुहूं के शृंगार संवारि, जु ह्वै बलिहारि सु प्यार पगे रहैं
दोउ दुहूं के निहार सुअंग, अनंग तरंगनि सों उमगे रहै ।।
दोउ दुहूं रहसै विहसै, विलसै हुलसै रति रंग रँगे रहैं ।
दोउ कहैं रस की बतिया, दिनहूं रतिया छतिया में लगे रहैं ८

।। दोहा ।।

युगल सनेह विनोद यह, अधिकारिन हित खास ।
रच्यो रसिक वल्लभ शरण, करन प्रमोद प्रकाश ।।
नरम सखा सखी भाव जेंहि, जग रति लगति गलानि ।
सिय पिय रास विलास के, अधिकारी तेहि जानि ।।

।। इति श्रीप्रेमाष्टक ।।

दोउ जने दोउ के अनूप रूप निरखत, पावत कहूं न छबिसागर को छोर है । चिन्तामणि केलि की कलानि के विलासिनि सो, दोउ बने दोउन के चित्तन के चोर है ।। दोउ जने मंद मुसुकानि सुधा बरसत, दोउ जने छके मोद मद दोउ ओर है । सीता जु के नैन रामचन्द्र के चकोर भये, राम नैन सीता मुख चन्द के चकोर हैं ।।

अथ युगल सनेह पंचक

मंजुल वंजुल कुंजन में, रस रंग दोऊ सुख पुंज पसारी ।
झुम झुक लिय चाप सो चौपरी, हारि जिती न नेकु विचारी
लालके माल सुवाल के वाल त्यों,लालके कुंडल के शान प्यारी
दोउ रहे उरझे अलकें, पलके न परैं तकें बुद्धि बिसारी ।।१
देखिके दोऊ दुहूं मुख चन्द,उनिन्दित नयन चकोर करें रहैं,
सूंघि सुगन्ध दुहूंन दुहून की, सुमानहिमत्त मलिन्द अरे रहै।।
प्रीति प्रतिति पगेप्रिया पाँव,करि वसुप्रेम पयोधि परे रहैहैं।
नैन सो नैन सुवैन सुवैन त्यों,अंश सो अंश प्रसंश धरे रहे हैं।।२
प्रीति सो पागे रहें दिन रैन, न चैन लहै पलको के परेते ।
दोउ दुहून को ढ़ौरत चौर भगावत भोंर की भीर धरे ते ।।
आनन्द इन्दु सुधा सुख सिंधु, पै लोचन चारु चकोर करे ते।
आनन्द कन्द सिया रघुनन्दन, पै पावत मोद गरे ही गरे ते।३
दोउ दुहूं के भूषण मंजू. डरे कर कंज सुधारी रहे हैं ।
रूप अनूप निहारि निहारि,निवारि निमेष सुनैन अरैं रहेहैं ।
नैन मनोहर स्वाति सुधा, सुनिवे कहं चातक सैन करे रहै।
दोउ दुहूँ परसे तरसे, न अघात तऊ नये नेह भरे रहै ।।४
दोऊ दुहूं के अनूप स्वरूप, निहारी स्वरूप सदा विसरे रहै।
दोऊ दुहूं को अंजनि आनि, दोऊ दुहूँ के दृग माहि अरे रहै।।
बीरी पवाय रहै मुसुकाय, दोऊ दुहूं के अनुराग भरे रहै ।
दोऊ दुहूं के पानीय प्रानन, वारत पानी पै पानी धरे रहैं।५

।। इति युगल सनेह पंचक ।।

बारह मासा

मेरे राघो विहारी सँवरिया हो ।
आओ प्रीतम हमारी अटरिया हो ।।

मधुमास तेरे जन्म का उत्सव मनाऊँगी ।
सखियों के साथ मिलके सोहिलो गवाँऊँगी ।।
ढाढ़िन बुलाके मैं नकलें कराऊँगी ।
तेरे मुख पे बार-२ अशर्फियाँ लुटाऊँगी ।।
भरि जइहैं खुशी से नगरिया हो ।।मेरे राघो०।।

वैशाख तुझे वर्फ के जल से नहलाऊँगी ।
घर चारों तरफ खसकी टटिया लगाऊँगी ।।
चन्दन अंगूर अनार का शर्बत पिलाऊँगी ।
सन्ध्या को सैर बाग की तुमको कराऊँगी ।।
जहाँ जलभरि सीतल नहरिया हो ।।मेरे राघो०।।

पुनि जेठ मास फूलों का बँगला बनाऊँगी ।
हर चारों तरफ फूलों की कलियाँ लगाऊँगी ।।
फूलों का करि सिंगार मैं उसमें बिठाऊँगी ।
फूलों का चमर छत्र वो पंखे चलाऊँगी ।।
लखि छवि नहिं टरिहैं नजरिया हो ।।मेरे राघो०।।

घन गर्ज सुधि आषाढ़ की जब मैं डेराऊँगी ।
झट दौड़ के चरणों में तेरे लोट जाऊँगी ।।

तब हाथ धरि हृदय की धड़कन मिटाऊँगी ।
ऐसे ले सारी रैन तेरे संग बिताऊँगी ।।
पिया जब तक न होइहैं सबेरिया हो ।।मेरे राघो०।।
सावन बहारदार हिंडोला गढ़ाऊँगी ।
सजके सिगांर प्यार से तुमको झुलाऊँगी ।।
गाऊंगी मैं मलार वो तुमसे गवाऊँगी ।
दिखला हाव भाव मैं तुमको रिझाऊँगी ।।
बरसैहों मैं रसकी फुहरिया हो ।।मेरे राघो०।।
भादों में नदी तट पे तुम्हें लेके जाऊँगी ।
जहाँ खूब ठाट बाट से नौका सजाऊँगी ।।
हर चारों तरफ नाव पर तुमको घुमाऊँगी ।
मुख चन्द लखि तुम्हार ना फूली समाऊँगी ।।
तुम देखिहो नदी की बहरिया हो ।।मेरे राघो०।।
आश्विन के प्रथम पक्ष में साँझी बनाऊँगी ।
जिसमें भाँति–२ के नक्शे दिखाऊँगी ।।
फिर रास शरद रैन में अद्भुत रचाऊँगी ।
करि नृत्यगान तान में तुमको लुभाऊँगी ।।
तब जइहो मेरी बलिहरिया हो ।।मेरे राघो०।।
कार्तिक दिवाली रैन महल जगमगाऊँगी ।
चौपर कभी शतरंज गंजीफा खेलाऊँगी ।।
हर बार सनम प्रेम की बाजी लगाऊँगी ।
जीतूंगी बार–२ मैं तुमको हराऊँगी ।।

रीझिहो देखि मेरी हो सियरिया हो ।।मेरे राघो०।।
अगहन में प्रीतम आपको दूल्हा बनाऊँगी ।
भूषन वसन विवाह का तुमको पेन्हाऊँगी ।।
सिर मौर हाथ पाँव में मेंहदी लगाऊँगी ।
भोजन के समय गालियाँ सुन्दर सुनाऊँगी ।
तब होइहैं बड़ी मजेदरिया हो ।।मेरे राघो०।।
ऊनी गलीचे मखमली गद्दे बिछाऊँगी ।
कश्मीर के पश्मीने का चादर ओढ़ाऊँगी ।।
गरमा गरम बादाम का हलुआ खिलाऊँगी ।
सर्दी से पूस मास में बेशक बचाऊँगी ।।
जरा लगिहैं न ठण्डी बेयरिया हो ।।मेरे राघो०।।
प्यारे बसन्त माघ में तुमको खेलाऊँगी ।
मण्डप में सभी साज बसन्ती सजाऊँगी ।।
फूलों का बना गेंद मजे से चलाऊँगी ।
गालों में जब गुलाल के बिन्दे लगाऊँगी ।।
हिये उठिहैं खुसी के लहरिया हो ।।मेरे राघो० ।
फागुन में बड़ी धूम का ृगुआ मचाऊँगी ।
कुमकुम अबीर गुलाल के बादर उड़ाऊँगी ।।
रोली लगा कपोल में रंग से भिगाऊँगी ।
सारी पेन्हाके तुमको मैं नारी बनाऊँगी ।।
नहीं चलिहैं तनिक बरजोरिया हो ।।मेरे राघो०।।

करूणा के सिन्धु बोले भक्ति के अनेक भेद मुख्य अंग चौंसठिहै बैठि सुनि लीजिये। गुरु शरणागत प्रथम, पञ्च संस्कार सन्त गुरु हरि में अभेद मन दीजिये ।। साधु सेवा साधु धर्म जानिबो यथा। उचित इष्ट अनुकूल ह्वै इतर त्यागि दीजिये। नेम सों अवध मिथिलादिधाम को निवास धाम अंग परिज्ञान रास रंग भीजिये। जग से प्रयोजन ही मात्र राखै व्यवहार दुर्जन को संग त्याग सदा हित जानिये ।। शिष्य न बहुत करै कर्म भर्म में न परै बहु मत वाद विद्या प्रत्यवाय मानिये ।। स्वकर संवारै तुलसी सुमन बाटिकादि सिया राम जन्म दिन उत्सव को ठानिये। प्रीतम के काज में कृपिनता को त्याग करै काम क्रोध परिहार बानी सत्य भानिये ।। इष्ट को परत्व दृढ़ और की न निन्दा करै भूत द्रोह त्याग इष्ट निन्दा हु न सहिये ।। बत्तिस सेवापराध त्यागे दश नाम हूं के परिक्रमा दण्ड वत्-नित्त्य नेम चाहिये ।। राम भक्त चिन्ह धनुवान औ युगल कंठि नाम मुद्रा अंगन में धारे नित्य रहिये। राघव प्रसाद चरणामृत में प्रीति करै माधुकरी वृत्तिहू विराग जुत गहिये ।। अग्रस्वामी आदि के प्रबन्ध गान मर्म सम स्वयं नृत्य गान संध्या बन्दन ज्यों कीजिये ।। लीला अनुकर्ण प्रेम प्रीतम को यान देखि आवत उत्थान करि संग लागि लीजिये ।। अष्ट जाम सेवा अन्त रंग बहिरंग दोउ एक सम मानिकै अभेद चित्त दीजिये ।। मन्त्र अर्थ ज्ञान नाम कीर्तन औ मन्त्र जाप बन्दना विज्ञापन विनये करि रीझिये ।। श्याम गौर मूर्ति के मधुर अंग पर्स करै रूप माधुरी में भले दृष्टि को लगावनो। चन्दन अतर बीरी दर्पन चमर छत्र भूषण वसन माल अर्पन करावनो ।। भोजन नवीन सेज सिंहासन सभा भौन बाटिका विहार रति लाड़को लड़ावनो। कृपा को निहारैं मधुधारा सम बृत्तिधारैं प्रभु ध्यान ही में लखि रीझनो रिझावनो ।। रामकथा कीर्तन श्रवण सार ग्रहन, शृंगार महामाधुरी पियूष को हिये धरै। दास्य संख्य आतम निवेदन औ प्यारी बस्तु प्यारे को समर्पन तदर्थ कर्म को करै ।। प्रीतम को लागे प्रिय सोई प्रिय आपने को सदाचार रीति चलै अन्य रीति सो डरै ।। मन बचकाय ते भरोसो सियाराम ही को जग नाते त्यागि प्रभु नाते ओर ढरै ।। इति चौसठि भेद सम्पूर्ण ।।